www.deshkiupasana.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - UPHIN/2022/86937

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE

सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 05 | अंक – 36 | जौनपुर, सोमवार, 21 सितम्बर 2026 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

संवाद और सहयोग से ही मजबूत होगी वैश्विक शांति

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दुनिया में शांति, अहिंसा और आपसी सहयोग के महत्व को रेखांकित करने के लिए हर साल 21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाया जाता है। इसे विश्व शांति दिवस के नाम से भी जाना जाता है। यह दिन वैश्विक स्तर पर संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान और शांति के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को दोहराने का अवसर देता है। संयुक्त राष्ट्र ने 1981 में इस दिवस की स्थापना की थी और 2001 में 21 सितंबर को इसे स्थायी रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के रूप में निर्धारित किया। आज जब दुनिया के कई हिस्से युद्ध, हिंसा, विस्थापन, मानवीय संकट और बढ़ते तनाव से जूझ रहे हैं, ऐसे समय में शांति का महत्व केवल युद्ध की अनुपस्थिति तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि न्याय, संवाद, मानवाधिकार, सामाजिक समावेशन और टिकाऊ विकास से भी गहराई से जुड़ जाता है। शांति को अक्सर संघर्ष या युद्ध की गैर–मौजूदगी के रूप में देखा जाता है, लेकिन इसका व्यापक अर्थ इससे कहीं अधिक है। स्थायी शांति के लिए ऐसे सामाजिक और राजनीतिक वातावरण की आवश्यकता होती है, जहां लोगों को अपने अधिकारों की सुरक्षा, न्याय तक पहुंच और सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर मिले। गरीबी, असमानता, भेदभाव, बेरोजगारी और संसाधनों को लेकर संघर्ष जैसी परिस्थितियां भी लंबे समय में सामाजिक तनाव को बढ़ा सकती हैं। इसलिए शांति स्थापना को सुरक्षा के साथ–साथ विकास और सामाजिक न्याय से जोड़कर देखा जाता है।

भूलने की बीमारी से आगे, स्मृति और सम्मान बचाने की चुनौती

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मनुष्य की पहचान केवल उसके नाम, चेहरे या शरीर से नहीं होती। उसकी असली पहचान उसकी यादों, अनुभवों, रिश्तों, भाषा, आदतों और जीवन से जुड़ी छोटी–बड़ी स्मृतियों से बनती है। यही कारण है कि जब किसी व्यक्ति की स्मरण शक्ति और सोचने–समझने की क्षमता धीरे–धीरे कमजोर होने लगती है, तो इसका असर केवल उसके स्वास्थ्य पर नहीं, बल्कि उसके आत्मविश्वास, व्यवहार, सामाजिक जीवन और परिवार पर पड़ता है। अल्जाइमर रोग इसी चुनौती का एक गंभीर रूप है। यह केवल भूलने की सामान्य समस्या नहीं, बल्कि मस्तिष्क से जुड़ी ऐसी खतरनाक बीमारी है, जो समय के साथ स्मृति, सोच, निर्णय लेने और रोजमर्रा के काम करने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। उम्र बढ़ने के साथ कुछ बातें भूल जाना सामान्य हो सकता है, लेकिन बार–बार एक ही बात पूछना, परिचित लोगों या स्थानों को पहचानने में परेशानी होना, रोजमर्रा के कामों में कठिनाई, बातचीत में सही शब्द न मिलना या व्यवहार में असामान्य बदलाव जैसे संकेतों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय रहते चिकित्सकीय सलाह और उचित जांच से स्थिति को समझने में मदद मिल सकती है।

जनता दर्शन- छोटी घटनाएं बड़ी न बनें, लोगों की समस्याएं सुन सीएम योगी

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में सोमवार को सीएम योगी आदित्यनाथ ने 'जनता दर्शन' में लोगों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान विभिन्न जिलों से लोग अपनी फरियाद लेकर पहुंचे। प्रार्थना पत्रों का अवलोकन करके सीएम ने कहा कि समाज में वैमनस्यता फैलाने वाले लोग मामूली घटनाओं को बड़ा बनाना चाहते हैं। ऐसे में जिलों में हर छोटी से छोटी घटना पर डीएम–एसपी नजर रखें। घटनास्थल पर पहुंचकर पीड़ितों की सुनवाई करें। दोषियों पर नियमानुसार कार्रवाई करें। चेतावनी दी कि छोटी–छोटी घटनाओं में भी उदासीनता व लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। 'जनता दर्शन' में सीएम योगी हर पीड़ित से मिले। उनकी समस्याओं व शिकायतों को सुना। प्रशासन, पुलिस, राजस्व, विद्युत आदि से जुड़ी शिकायतों पर उन्होंने कहा कि अधिकारी पात्र व्यक्ति को योजनाओं का लाभ दिलाएं। मरीजों के इलाज की व्यवस्था कराएं। भूमाफियाध्दबंगों पर कठोरतम कार्रवाई करें। सीएम के समक्ष पुलिस व राजस्व से जुड़ीं शिकायतें अधिक रहीं। इस पर उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि पुलिस कमिश्नर, एडीजी, आईजी, डीआईजी, एसएसपी स्तर के अधिकारी नियमित रूप से जनसमस्याओं का निराकरण कराएं। यदि किसी मातहत द्वारा लापरवाही की शिकायत मिले तो उस पर भी कार्रवाई करें। राजस्व और कानून व्यवस्था से जुड़े मामलों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए। इस दौरान मां के साथ आए नन्हें बच्चे से सीएम ने हालचाल पूछा। फिर पढ़ाई के बारे में भी जानकारी ली। उसकी तरफ चॉकलेट बढ़ाई तो उसने झट से ले ली। चॉकलेट वापस मांगी तो बच्चे ने मना कर दिया। इस पर पूरा हॉल खिलखिला उठा। सीएम ने सुखद भविष्य का आशीर्वाद देते हुए बच्चे से मन लगाकर पढ़ाई करने को कहा।

पश्चिम बंगाल में कुर्मी आंदोलनकारियों पर दर्ज सभी केस होंगे वापस, मुख्यमंत्री सुवेंदु का एलान

कोलकाता, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने रविवार को कहा कि पिछली तृणमूल कांग्रेस सरकार के दौरान आदिवासी कुर्मी समुदाय के सदस्यों, नेताओं और समर्थकों के विरोध प्रदर्शनों के सिलसिले में दर्ज सभी मामले वापस ले लिए जाएंगे। उन्होंने समुदाय को उनकी भाषा, संस्कृति, विरासत और अधिकारों को मान्यता देने और उनकी सुरक्षा का भरोसा भी दिलाया। कुर्मी समुदाय के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अधिकारी ने कहा कि उनकी सरकार समुदाय से किए गए वादों को पूरा करेगी, जिसमें कुर्माली भाषा से जुड़े कदम, पश्चिमी जिलों में विकास पर खर्च और कुर्मी विकास बोर्ड को फिर से शुरू करना शामिल है। उन्होंने यह भी कहा कि इस इलाके की पहाड़ियों और जंगलों को नुकसान नहीं पहुंचने दिया जाएगा। पुरुलिया–1 ब्लॉक की चकलटोर ग्राम पंचायत में कर्म पर्वतिया महाजारुया कार्यक्रम में बोलते हुए, अधिकारी ने पिछली सरकार पर कुर्मी समुदाय के साथ धोखा करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा पिछली सरकार ने अपना कोई भी वादा पूरा नहीं किया। वे यहां के लोगों से झूठ बोलते रहे और समुदाय के सदस्यों के बीच फूट डालकर उन्हें देश के बाकी हिस्सों से अलग–थलग करने की कोशिश की। आंदोलन के दौरान पुलिस का इस्तेमाल किया गया। झूठे केस दर्ज किए गए। यहां तक घ्कि बच्चों और बुजुर्गों को भी नहीं बख्शा गया। तृणमूल कांग्रेस के शासनकाल में, कुर्मी समुदाय ने राज्य के पश्चिमी जिलों में सड़क और रेल मार्ग जाम किए थे।

एशियाई खेलों में भारतीय निशानेबाजों की सफलता पर पीएम मोदी ने जताया गर्व

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एशियाई खेल 2026 में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में रजत पदक जीतने वाली सोनम उत्तम मस्कर, एलावेनिल वलारिवन और विदरसा के विनोद को बधाई दी। उन्होंने कहा कि निशानेबाजों की सफलता देश को गौरवान्वित करने के साथ आने वाले समय में कई एथलीटों को प्रेरित करेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने एशियाई खेलों में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक जीतने पर एलावेनिल वलारिवन को भी बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारतीय निशानेबाज लगातार देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि एलावेनिल का उसी दिन दूसरा पदक जीतना उपलब्धि को और खास बनाता है। पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि कड़ी मेहनत और टीम वर्क से शानदार परिणाम मिलते हैं। उन्होंने सोनम उत्तम मस्कर, एलावेनिल वलारिवन और विदरसा के विनोद के प्रदर्शन पर गर्व जताया और कहा कि उनकी सफलता आने वाले समय में कई एथलीटों को प्रेरित करेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने एलावेनिल वलारिवन के भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने भारतीय निशानेबाजों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि वे लगातार देश का गौरव बढ़ा रहे हैं।

एनजीटी सम्मेलन में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु न्याय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर जोर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रविवार को नई दिल्ली में राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) के दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'पर्यावरण और जलवायु गतिशीलता का भविष्य' के समापन सत्र को संबोधित किया। सम्मेलन का समापन एक सतत, जुझारू और न्यायसंगत भविष्य के लिए पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को प्रभावी कार्रवाई में बदलने, मजबूत संस्थानों के निर्माण और निरंतर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर जोर के साथ हुआ। समापन सत्र में केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों और विद्युत मंत्री मनोहर लाल, सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना, एनजीटी के अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव और भारत के सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता मौजूद रहे। राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में पर्यावरण प्रशासन को मजबूत करने में राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण की भूमिका की सराहना की। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान पर आधारित जन–केंद्रित और समुदाय–आधारित अनुकूलन दृष्टिकोणों के जरिए जलवायु सुदृढ़ीकरण पर जोर दिया। उन्होंने पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए स्थानीय समुदायों की भागीदारी और उनके अनुभवों को महत्व देने की आवश्यकता रेखांकित की। मनोहर लाल ने तीव्र विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखने के भारत के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि देश की कुल स्थापित ऊर्जा उत्पादन क्षमता का लगभग 55: गैर–जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि भारत ने अपनी 50: गैर–जीवाश्म क्षमता का लक्ष्य निर्धारित समय से पांच साल पहले ही हासिल कर लिया है। मंत्री ने सतत शहरी विकास, जल सुरक्षा, सार्वजनिक परिवहन, हरित गतिशीलता और इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़ी पहलों का भी उल्लेख किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सकारात्मक और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने घर-घर चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत की

धुरी (पंजाब), (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने रविवार को धुरी से आम आदमी पार्टी (आप) के घर–घर चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत की। चुनाव अपडेट्स देखें इस दौरान उन्होंने अपनी सरकार के साढ़े चार साल के कामकाज का रिपोर्ट कार्ड सीधे लोगों के घरों तक पहुंचाया और श्मानदा मुनाफाश को पार्टी के चुनाव प्रचार का मुख्य मुद्दा बनाया। सीएम भगवंत मान ने सरकार के कामों से लोगों को होने वाले सीधे आर्थिक फायदे का जिक्र करते हुए कहा कि मुफ्त बिजली, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और मावां धीयां सत्कार योजना जैसी पहलों से पंजाब के हर परिवार को सालाना 1.82 लाख रुपए का फायदा हो रहा है। अभियान के दौरान लोगों ने मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आम आदमी पार्टी 2022 से अब तक किए गए अपने कामों का रिकॉर्ड लेकर हर घर तक जाएगी। पार्टी का प्रचार सकारात्मक रहेगा और इसका पूरा ध्यान इस बात पर होगा कि सरकार ने पंजाब के लोगों के लिए क्या काम किए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पार्टी जमीन पर किए गए काम के आधार पर लोगों से समर्थन मांगेगी। साथ ही विपक्ष से उसके कामकाज और नशे के मुद्दे पर सवाल पूछे जाएंगे। अभियान के दौरान मुख्यमंत्री भगवंत मान ने धुरी में घर–घर जाकर परिवारों से मुलाकात की। उन्होंने बुजुर्गों, महिलाओं, युवाओं और बच्चों सहित समाज के अलग–अलग वर्गों के लोगों से बातचीत की। मुख्यमंत्री ने लोगों की राय सुनी और सरकार द्वारा पिछले साढ़े चार वर्षों में किए गए कामों पर चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि सरकार की अलग–अलग योजनाओं और पहलों का फायदा आम परिवारों को सीधे तौर पर कैसे मिल रहा है। लोगों ने सीएम भगवंत मान का गर्मजोशी से स्वागत किया, अपने अनुभव साझा किए और सरकार द्वारा किए गए कामों की सराहना की।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने अल नीनो से एक चुनौती के तौर पर निपटने का आह्वान किया

अमरावती, (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने रविवार को अल नीनो की स्थिति से एक चुनौती के तौर पर निपटने का आह्वान किया। उन्होंने अल नीनो के असर से निपटने के लिए कम समय और मध्यम अवधि की योजनाएं अपनाने का सुझाव दिया। उन्होंने अल नीनो के असर, स्थिति से निपटने के लिए जरूरी उपायों और कार्य योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों, जिला कलेक्टरों, कर्मचारियों और रायथु सेवा केंद्रों के कर्मियों के साथ टेलीकांफ्रेंस की। म्ततवत सवंकपदह के. उन्होंने बताया कि पूरे राज्य में बारिश में 50.7 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। बारिश में सबसे ज्यादा कमी प्रकाशम, अन्नमय्या और सत्य साईं जिलों में देखी गई है। खरीफ सीजन के दौरान 30.84 लाख हेक्टेयर जमीन पर खेती की योजना बनाई गई थी, लेकिन अल नीनो के असर के कारण 79 प्रतिशत जमीन पर खेती का काम शुरू हो पाया है। हालांकि दालों की खेती संतोषजनक है, लेकिन तिलहन की खेती कम है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे किसानों की मदद करने और कीमतों को काबू में रखने पर ध्यान दें। अधिकारियों को चावल, प्याज, पाम ऑयल और अरहर दाल की कीमतों को नियंत्रित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि हमने अल–नीनो की स्थिति का पहले ही अंदाजा लगा लिया था। सभी को पहले से तैयार एक्शन प्लान के मुताबिक काम करना चाहिए। अल–नीनो का असर सिर्फ किसानों पर ही नहीं, बल्कि सभी सेक्टर पर पड़ता है। किसानों को अल–नीनो के असर से बचाने की कोशिश करते हुए।

अत्यंत दुखद समाचार – अखिलेश श्रीवास्तव प्रधानाध्यापक औका इन्टर कालेज का अचानक हृदय गति रुक जाने से निधन – समाज और परिवार में शोक की लहर

देश की उपासना प्रतिनिधि

जौनपुररूअखिल भारतीय कायस्थ महासभा 7235 उत्तर प्रदेश महिला शाखा की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव अध्यापिका के पति अखिलेश श्रीवास्तव प्रधानाध्यापक, औका इंटर कॉलेज जौनपुर का दिनांक 19.09.2026 को अचानक हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया ,उनका अंतिम संस्कार जनपद के रामघाट पर देर साम किया गया , बता दें कि अखिलेश श्रीवास्तव प्रधानाध्यापक को विगत दिनों चोट आ गई थी, जिनका इलाज चला, लगभग स्वस्थ हो गए थे कि अचानक से हृदय गति रुकने के कारण निधन हो गया। प्रिंसिपल साहब अखिलेश श्रीवास्तव जी के निधन पर पूरा समाज मर्माहत है और भावभीनी श्रद्धांजलि के लिए लोग उनके निज निवास कचहरी रोड जौनपुर पहुच रहे हैं स अखिलेश श्रीवास्तव जी एक शिक्षक के साथ साथ सामाजिक और व्यवहारिक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे, देश की उपासना समाचार पत्र परिवार उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हैं।

पीजीटी और टीजीटी में चयनित 25 शिक्षकों को सीएम योगी के हाथों मिलेगा नियुक्तिपत्र

डीआईओएस के नेतृत्व में पीजीटी-टीजीटी में चयनित शिक्षक लखनऊ रवाना

(डाक्टर अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या। पीजीटी एवं टीजीटी परीक्षा मे सफल जिले के 25 चयनित शिक्षकों को भी 22 सितंबर को लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नियुक्ति पत्र प्रदान करेंगे। नियुक्ति पत्र लेने के लिए सभी 25 शिक्षक सोमवार को शिक्षा भवन से बस द्वारा लखनऊ रवाना हुए।लखनऊ रवाना होने से पहले डीडीआर (माध्यमिक) अयोध्या/देवीपाटन मंडल राकेश कुमार व डीआईओएस डॉ. पवन कुमार तिवारी ने चयनित शिक्षकों को मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दीं।चयनित शिक्षकों को लखनऊ ले जाने और कार्यक्रम के बाद वापस लाने की जिम्मेदारी का नेतृत्व स्वयं डीआईओएस डॉ. पवन कुमार तिवारी कर रहे हैं।इस मौके पर चयनित शिक्षिका कोमल वर्मा सहित अन्य शिक्षकों ने नियुक्ति मिलने पर मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताया।उन्होंने कहा कि शिक्षक के रूप में उनकी प्राथमिकता विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के साथ उनके बौद्धिक, मानसिक और सर्वांगीण विकास पर रहेगी। उन्होंने कहा कि बेहतर शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने के साथ समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान देना उनका प्रमुख उद्देश्य होगा। इन दोनों अधिकारियों ने चयनित शिक्षकों को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि सभी शिक्षक अपने दायित्वों का निष्ठा और समर्पण के साथ निर्वहन करेंगे।उन्होंने उम्मीद जताई कि ये शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य को दिशा देने के साथ शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देंगे।

संपादकीय

पुनर्विचार करने का वक्त

दुनिया में बदले समीकरणों के बीच एससीओ में प्रभावी देशों के साथ भारत के रुख की दूरी बढ़ती नजर आई है। इसकी संभवतरू सबसे प्रमुख मिसाल चीन की महत्त्वाकांक्षी योजना– बीआरआई है। शंघाई सहयोग संगठन की शिखर बैठक में कही गई बातों और बिशकेक घोषणापत्र पर गौर करें, तो अहसास होता है कि इस मंच पर भारत की उपस्थिति लगातार असहज होती जा रही है। अब अगले शिखर सम्मेलन की मेजबानी पाकिस्तान को मिली है। दोनों देशों के संबंध के मौजूदा हाल को देखते हुए सवाल उठता है कि क्या वहां होने वाली एससीओ की अनेक बैठकों में भाग लेने भारतीय प्रतिनिधि जाएंगे? वैसे भी दुनिया में बदले समीकरणों के बीच इस मंच में प्रभावी देशों के साथ भारत के रुख की दूरी बढ़ती नजर आती है। इसकी संभवतरू सबसे बड़ी मिसाल चीन की महत्त्वाकांक्षी योजना– बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) है। किर्गिजिस्तान की राजधानी में हुए शिखर सम्मेलन के बाद जारी साझा घोषणापत्र में भारत को फिर उस अनुच्छेद से खुद को अलग रखना पड़ा, जिसमें बीआरआई का समर्थन किया गया है। आठ सदस्य देशों– बेलारूस, ईरान, कजाखस्तान, किर्गिजिस्तान, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान– ने बीआरआई के प्रति फिर अपना समर्थन जताया। साथ ही इसे यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईएईयू) के साथ जोड़ने की बात भी कही गई। ईएईयू में प्रमुख भूमिका रूस की है। स्पष्टतरू बीआरआई एससीओ के आर्थिक और आपसी जुड़ाव (कनेक्टिविटी) एजेंडे का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिखर सम्मेलन में कहा कि कनेक्टिविटी बढ़ाते समय देशों की प्रादेशिक संप्रभुता का ख्याल रखा जाना चाहिए। बीआरआई के तहत निर्मित श्चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियाराश पाकिस्तानी कब्जे वाले जम्मू–कश्मीर से गुजरता है। इसके अलवा एससीओ में ईरान पर अमेरिका– इजराइल के हमले तथा फिलस्तीन के गजा में इजराइल की श्विनाशकारीश कार्रवाई भी ऐसे मुद्दे हैं, जहां भारत का रुख एससीओ के बाकी देशों से अलग रहा है। यह अलगाव बिशकेक में भी जाहिर होता रहा। यह साफ है कि चीन, रूस, और ईरान की वैश्विक रणनीति में फिलहाल सामंजस्य बन गया है। बाकी सदस्यों को इस रणनीति पर कोई एतराज नहीं है, हालांकि उनमें से कुछ ने अमेरिकी खेमे के साथ भी अपने दांव जोड़ रखे हैं। स्पष्टतरू भारत के लिए यह पुनर्विचार करने का वक्त है कि एससीओ से उसकी क्या अपेक्षाएं हैं और क्या वे पूरी हो रही हैं?

नई पीढ़ी को नरेंद्र मोदी से मिले उड़ान के लिए पंख

पी.वी. सिंधु

क्या होता अगर दस साल पहले कोई भारतीय युवा लड़की कहती कि उसे रॉकेट बनाना है। उसे इसरो में शामिल होकर नहीं, बल्कि अपना खुद का रॉकेट बनाना है। ऐसी स्थिति में शायद उसके आसपास के लोग खामोश रह जाते। फिर कोई बहुत सहानुभूति से उसे समझाता कि यह उसके बस की बात नहीं है। वह समझाता की अंतरिक्ष पर सिर्फ सरकार का हक होता है। इतने बड़े सपने तो दूसरे देशों के लोगों के लिए होते हैं। 18 जुलाई, 2026 को एक प्राइवेट भारतीय कंपनी का बनाया रॉकेट अंतरिक्ष की कक्षा में पहुंच गया। इस रॉकेट को स्काईरूट ने बनाया था, जिसकी बुनियाद दो नौजवान इंजीनियरों ने रखी थी। दोनों ने अपने सुरक्षित काम छोड़ कर इस लगभग नामुमकिन सपने को सच करने की ठान रखी थी। स्काईरूट की इस कामयाबी के साथ ही भारत दुनिया के उन सिर्फ तीन देशों में शामिल हो गया जहां किसी आम नागरिक की प्राइवेट कंपनी अंतरिक्ष तक पहुंच सकती है। इस कामयाबी को हासिल करने वाले बाकी दो देश अमेरिका और चीन हैं। वह लड़की, जिसके सपने के पूरा होने का किसी को भी भरोसा नहीं था, अब वह कह सकती है– श्मैं एलन मस्क बनना चाहती हूं। यह कोई नारा नहीं, बल्कि मेरा पक्का इरादा है।श्व बेशक, वह अपने सपने को पूरा करने की यात्रा को शुरू कर सकती है। पिछले दस वर्षों में हमारे देश में प्रतिभाओं में कोई बदलाव नहीं आया है। भारत के पास काबिलियत हमेशा से थी। जो चीज बदली, वह था अवसर। हमारे इतिहास में ज्यादातर समय किसी बड़े सपने का जवाब यह होता था कि ऐसा करना मुमकिन नहीं है। इसलिए नहीं कि काबिलियत में कोई कमी थी। इसलिए कि मंजिल तक पहुंचने का दरवाजा ही बंद था। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सबसे खामोश और सबसे बड़ी कामयाबी यह रही कि अब वह दरवाजा खुल चुका है। इस बदलाव की गहराई को समझना बहुत जरूरी है। दशकों तक भारत में हर बड़े सपने को रुकावटों का सामना करना पड़ता था। कोई भी अहम काम करने के लिए आपको लाइसेंस, मंजूरी, जान–पहचान या प्रभावशाली परिवार के नाम की जरूरत पड़ती थी। देश में सपने देखने वालों की कमी कोई कमी नहीं थी। कमी थी तो सिर्फ दरवाजों की। और जब दरवाजे कम हों तो वे सबसे पहले उनके लिए खुलते हैं जिनके पास पहले से चाबियां होती हैं। नौजवान, गरीब और वे लोग दरवाजे के बाहर ही इंतजार करते रह जाते थे जिनके पास कोई बड़ी पहचान नहीं थी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बंद दरवाजे को देखा और समझा कि असल में इसके क्या कारण थे। उन्होंने इस बदलाव को एक ही लाइन में बयान किया– सरकार का रवैया श्जब तक इजाजत न हो, तब तक पाबंदीश्व से बदल कर श्जब तक मना न हो, तब तक इजाजतश्व हो गया है। उनके पूरे दशक के काम के पीछे एक पक्का संकल्प रहा है– पाबंदियों की इस दीवार को गिराना और उसकी जगह खुले दरवाजों वाला देश बनाना। ऐसा देश जहां इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसकी संतान हैं। फर्क इससे पड़ता है कि आप क्या बनाने की काबिलियत रखते हैं। जरा गौर करें कि क्या–क्या खुल गया है। अंतरिक्ष पर 60 साल तक सरकार का एकाधिकार रहा। 2020 में उसे उन सबके लिए खोल दिया गया जिनके पास रॉकेट छोड़ने की योग्यता थी। फिर हमारे खेतों के ऊपर का आसमान खुला। उस रूल बुक को फाड़ कर फेंक दिया गया जिसके मुताबिक एक छोटे से ड्रोन को उड़ाने के लिए दर्जनों कागजात और इजाजतों की जरूरत पड़ती थी। अब किसी छोटे शहर का कोई नौजवान अपना ड्रोन बना सकता है। उसे फोन के जरिए रजिस्टर कर अपना कारोबार शुरू कर सकता है। गांवों की हजारों महिलाओं के हाथों में ड्रोन सौंप दिए गए जिससे भविष्य का एक हिस्सा उनकी आजीविका का जरिया बन गया। इनमें से कुछ बदलाव बहुत देर से आए लेकिन उनकी अहमियत उतनी ही ज्यादा थी। 2021 में मानचित्रों को मुक्त कर दिया ताकि किसी भारतीय कंपनी को उस देश का सर्वे करने के लिए किसी मंजूरी की जरूरत नहीं पड़े जिसमें वह पहले से काम कर रही है। 2023 में एक ही कानून के जरिए सैकड़ों कानूनों में बदलाव किया गया। इस कानून के जरिए एक हजार से ज्यादा वैसे मामलों में आपराधिक सजा के प्रावधान को खत्म कर दिया गया जिनका संबंध कागजी औपचारिकताओं से था। उद्देश्य यह था कि सिर्फ एक फॉर्म छूट जाने पर किसी को जेल नहीं जाना पड़े।

2014 में अंतरिक्ष से संबंधित सिर्फ एक स्टार्टअप था। लेकिन आज भारत में ऐसे लगभग 440 स्टार्टअप हैं। उस समय कोई भी ड्रोन स्टार्टअप नहीं था मगर अब इनकी संख्या सैकड़ों में पहुंच चुकी है। लेकिन सिर्फ दरवाजे खोलना अधूरी बात होगी। एक खुले दरवाजे का कोई फायदा नहीं अगर वहां तक पहुंचने का आपके पास कोई रास्ता ही न हो।

41 साल से प्रतीक्षा कर रहे लोगों को न्याय नहीं दिला पाया कनाडा

नीरज

कनाडा के इतिहास के सबसे भीषण आतंकवादी हमले की जांच को लेकर एक बार फिर ऐसा विवाद खड़ा हो गया है, जिसने चार दशक पुराने कनिष्क विमान कांड के पीड़ित परिवारों के जख्म ताजा कर दिए हैं। आरोप है कि कनाडा की संघीय पुलिस अब 1985 में एयर इंडिया के विमान संख्या 182 में हुए बम विस्फोट की जांच को सीमित करने और मामले को निष्क्रिय श्रेणी में डालने पर विचार कर रही है। यदि ऐसा होता है तो सवाल सिर्फ एक जांच के भविष्य का नहीं होगा, बल्कि यह भी पूछा जाएगा कि 329 लोगों की हत्या के पीछे मौजूद पूरे षडयंत्र का सच सामने लाने की जिम्मेदारी से कनाडा आखिर कब तक बचता रहेगा? उल्लेखनीय है कि 23 जून 1985 को मॉन्ट्रियल से लंदन जा रहे कनिष्क विमान में आयरलैंड के तट से दूर अटलांटिक महासागर के ऊपर बम विस्फोट हुआ था। विमान में सवार सभी 329 लोगों की मौत हो गई थी। इनमें 268 कनाडाई नागरिक थे। इसी साजिश से जुड़े एक अन्य बम विस्फोट में जापान के नारिता हवाई अड्डे पर दो सामान कर्मियों की भी जान गई थी। कनाडा स्वयं इस हमले को अपने इतिहास का सबसे घातक आतंकवादी हमला मानता रहा है। अब 41 साल बाद पीड़ित परिवारों को बताया जा रहा है कि जांच को सीमित किया जा सकता है। 12 सितंबर को टोरंटो में हुई बैठक में कनाडा की संघीय पुलिस के अधिकारियों ने कथित तौर पर परिवारों को जांच दल का आकार घटाने और मामले को निष्क्रिय स्थिति में ले जाने की संभावित योजना की जानकारी दी। बैठक में मौजूद परिवारों की प्रतिक्रिया बेहद तीखी रही और कई लोग भावुक होकर टूट गए। परिवारों के लिए यह चार दशक से चले आ रहे न्याय के संघर्ष पर चोट है। इसको देखते हुए कनिष्क फाउंडेशन के अध्यक्ष संजय लाजर ने कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी को लिखे पत्र में इस संभावित कदम का कड़ा विरोध किया है। लाजर ने 16 सितंबर के अपने पत्र में बताया कि उन्होंने इस हमले में अपने पिता, मां और शिशु बहन को खो दिया। चार दशक से अधिक समय तक न्याय की तलाश में लगे परिवार के सदस्य के लिए यह सवाल स्वाभाविक है कि जिस मामले को कनाडा की अपनी व्यवस्था ने कभी अपने इतिहास की सबसे जटिल और बड़ी जांचों में शामिल किया, उसे अब अचानक ठंडे बस्ते में डालने की तैयारी क्यों हो रही है? सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या जांच की सभी संभावित दिशाएं वास्तव में समाप्त हो चुकी हैं? यदि हां, तो कनाडा सरकार को यह सार्वजनिक रूप से स्पष्ट करना चाहिए कि कौन–कौन से रास्ते आजमाए गए, किन सबूतों की पड़ताल हुई और किन कारणों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि अब आगे कुछ नहीं किया जा सकता। केवल नए सुराग नहीं मिलने को चार दशक पुराने मामले को निष्क्रिय करने का पर्याप्त आधार मानना क्या पीड़ित परिवारों के साथ न्याय होगा? इस मामले का इतिहास कनाडा की सुरक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है। कनाडा की न्यायमूर्ति मेजर की अध्यक्षता वाले जांच आयोग ने हमले से पहले और बाद की सुरक्षा तथा खुफिया व्यवस्था में कई गंभीर कमियों की पड़ताल की थी। खतरे से जुड़ी सूचनाओं के आदान–प्रदान, विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय, गवाहों की सुरक्षा और हमले के बाद की जांच जैसे विषय आयोग के केंद्र में रहे। यानी कनिष्क कांड केवल आतंकवादियों की साजिश की कहानी नहीं है, बल्कि यह कनाडा की संस्थागत विफलताओं का भी दस्तावेज है। आपराधिक मुकदमों का परिणाम भी परिवारों के लिए संतोषजनक नहीं रहा। दो मुकदमे चले। इंदरजीत सिंह रेयात को विस्फोटों से संबंधित मामले में दोषी ठहराया गया, जबकि दो अन्य आरोपितों को 2005 में बरी कर दिया गया। आयोग के अनुसार इसके बाद किसी और व्यक्ति पर आरोप नहीं लगाया गया। ऐसे में 329 मौतों के पीछे मौजूद व्यापक साजिश का पूरा सच आज भी सवालों के घेरे में है। परिवारों की नाराजगी इसलिए भी गहरी है क्योंकि उनका आरोप है कि जांच के दौरान महत्वपूर्ण साक्ष्य गायब हुए, निगरानी से जुड़ी कुछ रिकॉर्डिंग मिट गईं और कुछ गवाहों की मृत्यु हुई या उन्हें धमकियों का सामना करना पड़ा। इन दावों को आधिकारिक निष्कर्षों से अलग रखते हुए भी यह सवाल अपनी जगह कायम है कि यदि अतीत में जांच के दौरान कमियां रही हैं तो क्या उनका समाधान जांच बंद करना होना चाहिए या उन अधूरे पहलुओं को फिर से खंगालना होना चाहिए? सबसे विचित्र बात यह है कि अब परिवारों से ही नए सुराग लाने की अपेक्षा की जा रही है। चार दशक तक जांच का भार सरकारी एजेंसियों के पास रहा। ऐसे में पीड़ितों से यह कहना कि वे नए सुराग लेकर आएं, परिवारों के लिए बेहद पीड़ादायक है। उनका सवाल है कि क्या सरकार की जांच व्यवस्था अब अपनी जिम्मेदारी पीड़ितों के कंधों पर डाल रही है? परिवारों ने इसका विकल्प भी सामने रखा है। 1995 में कनाडा सरकार और संघीय पुलिस ने हमले के दोषियों से जुड़ी जानकारी देने पर दस लाख कनाडाई डॉलर के इनाम की घोषणा की थी, जो अब तक दावा रहित है। परिवार चाहते हैं कि इस इनाम को फिर से लागू किया जाए, राशि बढ़ाई जाए और व्यापक स्तर पर नई अपील की जाए। उनका तर्क है कि यदि पुराने सुराग खत्म हो चुके हैं तो नए सुराग पैदा करने की कोशिश क्यों न की जाए? परिवार यह भी कह रहे हैं कि यदि मौजूदा जांच दल आगे बढ़ने में सक्षम नहीं है तो किसी दूसरे दल या अतिरिक्त विशेषज्ञता के जरिए जांच को आगे बढ़ाया जाए। आखिर जांच दल की क्षमता की सीमा को पूरे मामले की सीमा क्यों मान लिया जाए? यहां कनाडा सरकार के सामने एक और गंभीर सवाल है। यदि सरकार स्वयं हर वर्ष इस हमले के 329 पीड़ितों को याद करती है और कनिष्क विमान विस्फोट को कनाडा के इतिहास का सबसे घातक आतंकवादी हमला मानती है, तो फिर न्याय की तलाश

को प्रशासनिक निष्क्रियता के हवाले करने की नौबत क्यों आ रही है? जून 2026 में प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने भी हमले की 41वीं बरसी पर 329 पीड़ितों को याद किया था। क्या उनकी सरकार इस मामले को दबते हुए देखते रहेगी? कनिष्क फाउंडेशन के अध्यक्ष संजय लाजर ने अपने पत्र में पूर्व प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर द्वारा परिवारों को दिए गए आश्वासन का भी उल्लेख किया है कि दोषियों की पहचान और मामले को तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने के प्रयास जारी रहेंगे।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी के संवर्धन से जुड़े कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने पर बल दिया

प्रो. संजय

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की हिंदी सेवा एक नहीं, अनेक दृष्टियों से ध्यान देने योग्य है। मूलतः गुजरातीभाषी श्री शाह स्वयं हिंदी में काम करते हैं, इसलिए स्वाभाविक तौर पर हिंदी में सरकारी प्रति अमित शाह का लगाव केवल औपचारिक राजभाषा–नीति तक सीमित नहीं दिखाई देता। वर्ष 2019 में हिंदी दिवस के अवसर पर उन्होंने हिंदी को स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना से जोड़ा था। गत वर्ष 2025 में भी श्री शाह ने हिंदी दिवस पर आयोजित

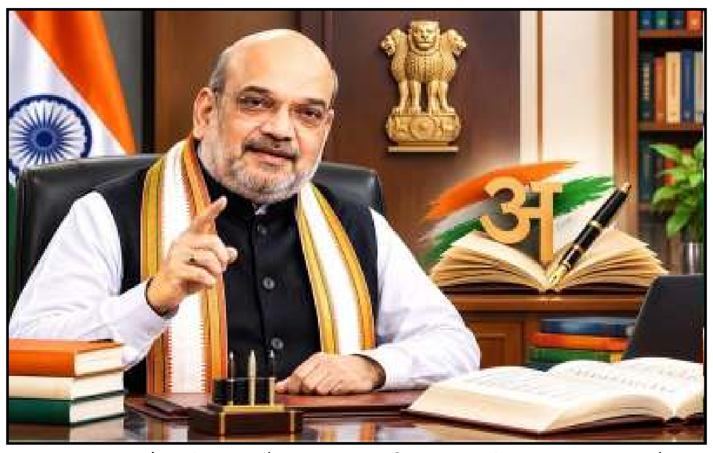

कामकाज बढ़ा है। श्री शाह के कारण सरकारी पत्रावलियां हिंदी में बनती हैं। श्री शाह के मार्गदर्शन में केंद्रीय गृह मंत्रालय राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं, अनुवाद–कार्य और हिंदी–सलाहकार समितियों के माध्यम से लगातार प्रयासरत है। श्री शाह हिंदी को प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, पत्रकारिता और उच्च ज्ञान–विमर्श की भाषा बनाने के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री, आधुनिक शब्दावली और अनुवाद की मजबूत व्यवस्था की अनवरत हिमायत करते हैं। हिंदी के अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी के संवर्धन से जुड़े कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने पर बल दिया था। पिछले एक वर्ष में माननीय गृह मंत्री जी के नेतृत्व में राजभाषा विभाग ने हिंदी के साथ–साथ भारतीय भाषाओं के लिए भी कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। जून 2025 में भारतीय भाषा अनुभाग की शुरुआत हुई। इसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं के बीच संवाद बढ़ाना और उन्हें तकनीक तथा प्रशासन से जोड़ना है। इस पहल से राजभाषा विभाग के काम का दायरा भी व्यापक हुआ है। विभाग ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों यानी नराकासों के काम को प्रोत्साहित करने के लिए 'नराकास प्रोत्साहन सम्मान' की व्यवस्था भी शुरू की है। इससे उन नराकासों को आगे आने का अवसर मिलेगा, जो अपने क्षेत्र में राजभाषा के काम को बेहतर ढंग से आगे बढ़ा रही हैं। तकनीक के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने नई पहल की है। 'भारती – बहुभाषी अनुवाद सारथी' के माध्यम से हिंदी से भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को आसान बनाने की दिशा में काम हुआ है। इसके साथ 'हिंदी शब्द–सिंधु' जैसे शब्दकोश को भी विकसित किया गया है। हिंदी शब्द–सिंधु' में विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल किया जा रहा है। इसका उद्देश्य हिंदी को दूसरी भारतीय भाषाओं से जोड़ना है, न कि उनसे अलग करना। इन प्रयासों से साफ है कि राजभाषा का काम अब केवल सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग तक सीमित नहीं है। यह भाषा, तकनीक और भारतीय भाषाओं के बीच नए संबंध बनाने की दिशा में भी आगे बढ़ रहा है। श्री शाह के हिंदी प्रेम का एक उल्लेखनीय पक्ष यह भी है कि वे हिंदी को भारतीय भाषाओं की प्रतिद्वंद्वी के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनके साथ चलने वाली भाषा के रूप में देखते हैं। अमित शाह का हिंदी प्रेम हिंदी के विकास के साथ भारतीय भाषाओं के सम्मान और संरक्षण के रूप में आगे बढ़ता है। कहना न होगा कि यह दृष्टि भारतीय भाषायी एकता को मजबूत करनेवाली है। हिंदी की वास्तविक शक्ति उसकी आत्मीयता, समावेशिता और संवादधर्मिता में है। भारत में हिंदी का विस्तार तभी सार्थक होगा, जब वह दूसरी भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और संवाद का भाव लेकर आगे बढ़े। हिंदी का भारतीय भाषाओं से संबंध वर्चस्व का नहीं, आदान–प्रदान का होना चाहिए। भारतीय भाषाओं का इतिहास भी प्रतिस्पर्धा का इतिहास नहीं, बल्कि परस्पर आदान–प्रदान का इतिहास है। हिंदी ने दूसरी भारतीय भाषाओं से असंख्य शब्द, मुहावरे, साहित्यिक संस्कार और विचार ग्रहण किए हैं। दूसरी ओर हिंदी के माध्यम से भी अनेक भारतीय भाषाओं का साहित्य व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचा है। इसलिए हिंदी को संपर्क और सेतु की भाषा के रूप में विकसित किया जा सकता है। शाह का यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है कि हिंदी की समृद्धि भारतीय भाषाओं की समृद्धि से जुड़ी है। भारतीय भाषाओं की विविधता का सम्मान बनाए रखना ही भारत की भाषायी वास्तविकता के अनुरूप है। श्री अमित शाह का यह विचार आज विशेष रूप से प्रासंगिक है। श्री शाह के लिए हिंदी का समर्थन किसी एक क्षेत्रीय पहचान का विस्तार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर संचार की एक साझा भाषा को मजबूत करने का प्रयास है। भारत की भाषायी परंपरा में हिंदी का महत्व केवल इसलिए नहीं है कि उसे देश के बड़े भूभाग में समझा और बोला जाता है, बल्कि इसलिए भी कि वह उसने विभिन्न प्रदेशों, समुदायों और भाषायी संस्कृतियों के बीच संवाद का माध्यम बनने की ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद, सोशल मीडिया और डिजिटल प्रकाशन के दौर में हिंदी के सामने अभूतपूर्व अवसर हैं। यदि हिंदी में उच्चस्तरीय वैज्ञानिक, तकनीकी, दार्शनिक और सामाजिक विज्ञान संबंधी सामग्री का पर्याप्त निर्माण होता है, तो वह ज्ञान की भाषा के रूप में अपनी भूमिका और मजबूत कर सकती है। साथ ही यही तकनीक अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिए भी इस्तेमाल की जानी चाहिए। शाह उन गुजरातीभाषी मनीषियों की पांत में आ गए हैं जिनमें स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह तक की हिंदी के प्रति आग्रह की एक ऐसी परंपरा दिखाई देती है, जिसमें हिंदी को राष्ट्रीय संवाद और जनजागरण की भाषा बनाने की आकांक्षा प्रमुख रही है। हिंदी के अनेक हिंदीतरभाषियों ने अपने विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए हिंदी को अपनाया। दयानंद सरस्वती ने संस्कृत के प्रकांड विद्वान होने के बावजूद अपने सामाजिक और धार्मिक सुधार के संदेश को केवल संस्कृत के विद्वत् वर्ग तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने जनसाधारण तक पहुँचने के लिए हिंदी का सहारा लिया। उनकी प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश मूलतः हिंदी में लिखी गई। इसी तरह महात्मा गांधी मूलतः गुजरातीभाषी थे किंतु हिंदी में अखबार निकाले और हिंदी के महत्व को एक अलग राजनीतिक और राष्ट्रीय संदर्भ प्रदान किया। दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार के लिए उन्होंने अपने पुत्र देवदास गांधी को भेजा और 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना के प्रयासों को आगे बढ़ाया। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक संवाद में हिंदी का व्यापक प्रयोग दिखाई देता है। वे देश–विदेश के अलग–अलग हिस्सों में लोगों से संवाद करते हुए हिंदी का प्रयोग करते हैं और भारतीय भाषाओं के महत्व पर भी जोर देते रहे हैं। दयानंद सरस्वती, गांधी, नरेंद्र मोदी और अमित शाह – इन चारों की हिंदी संबंधी दृष्टियों को एक साथ देखने पर हिंदी के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण सूत्र निकलता हैरू हिंदी जितनी जनभाषा होगी, उतनी ही प्रभावी होगीय जितनी समावेशी होगी, उतनी ही स्वीकार्य होगीय और जितनी भारतीय भाषाओं से जुड़ेगी, उतनी ही समृद्ध होगी।

ब्रिक्स सम्मेलन - भारत-चीन रिश्तों की अब असली परीक्षा

अजीत रानाडे

प्रवासी नेटवर्क जुड़ें चीन के साथ रिश्तों में नरमी आने से अमेरिका, यूरोप, जापान या क्वाड के साथ भारत के संबंधों पर असर नहीं पड़ना चाहिए। भारत को ब्रिक्स, एससीओ, क्वाड, जी–20 और अन्य उपयोगी समूहों में एक साथ सक्रिय रहना चाहिए। भारत के भविष्य के फैसले इनमें से किसी भी रिश्ते के बंधक नहीं हो सकते। यही रणनीतिक स्वायत्तता है। अगले साल चीन ब्रिक्स की अध्यक्षता संभालेगा। दिल्ली में हाल ही में हुए ब्रिक्स समिट को शायद किसी बहुत दमदार घोषणा के लिए याद न किया जाए लेकिन इस सम्मेलन की वजह से भारत को होने वाले ज्यादा अहम नतीजे पर ध्यान नहीं जा पाएगा। क्या ब्रिक्स ने भारत–चीन रिश्तों में सुधार की रफ्तार बढ़ाने में मदद की?भारत की कूटनीतिक कामयाबी यह नहीं थी कि उसने समिट का आयोजन किया क्योंकि वैसे भी ब्रिक्स की अध्यक्षता भारत के पास ही थी। असल कामयाबी यह थी कि वह ऐसे देशों के बीच एक साझा घोषणापत्र तैयार करवा पाया जिनके हित अक्सर टकराते हैं। तनाव के बावजूद ईरान और यूएई एक ही मेज पर बैठ सके, चीन पहलगाम आतंकी हमले की निंदा करने वाली भाषा पर सहमत हो सका और सदस्य देश पश्चिम एशिया में बातचीत पर सहमत हो सके जबकि उनके गुट और झुकाव बिल्कुल अलग–अलग थे। भारत ने 2023 में अपनी जी–20 अध्यक्षता के दौरान भी कुछ ऐसा ही किया था जब उसने यूक्रेन मुद्दे पर गहरे मतभेदों के बावजूद आम सहमति वाली भाषा तैयार की थी।यहां हमारे अपने देश के लिए भी एक सबक है। अगर भारत ब्रिक्स के भीतर विरोधाभासों को संभाल सकता है तो वह चीन के साथ अपने कई तरह के रिश्तों में मौजूद विरोधाभासों को क्यों नहीं संभाल सकता? समिट के दौरान मोदी और शी की मुलाकात साझा बयान से कहीं ज्यादा अहम थी। शी सात साल में पहली बार भारत के दौरे पर आए थे। दोनों नेताओं ने सीमा पर शांति, व्यापारिक संबंधों, बाजार तक पहुंच, व्यापार में संरचनात्मक असंतुलन और आपसी आदान–प्रदान बढ़ाने पर चर्चा की। इसे सुलह कहना बेवकूफी होगी लेकिन यह निश्चित से एक मौका है।भारत और चीन पड़ोसी हैं और दोनों मिलकर दुनिया की एक–तिहाई से ज्यादा आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। भूगोल को बदला नहीं जा सकता और न ही दोनों के बीच का सीमा विवाद जल्द खत्म होने वाला है। 1988 में डेंग जियाओपिंग ने राजीव गांधी को जो मशहूर सलाह दी थी वह आज भी प्रासंगिक है–श्अगर हमारी पीढ़ी में सीमा विवाद को सुलझाने की समझ नहीं है तो इसे आने वाली ज्यादा समझदार पीढ़ी पर छोड़ देना चाहिए।श्व इसका मतलब गलवान को भूलना नहीं है जहां 2020 में 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए थे। सीमा की मजबूती से रक्षा की जानी चाहिए लेकिन पूरे रिश्ते को ठप किए बिना सीमा पर तनाव को सीमित रखा जा सकता है।असल में, भारत और चीन पहले से ही अलग–अलग मुद्दों को अलग–अलग रखकर काम कर रहे हैं। बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में उन्होंने पाकिस्तान, रूस और अन्य देशों के साथ मिलकर आतंकवाद से निपटने में दोहरे मापदंडों को खारिज करने वाले एक घोषणापत्र का समर्थन किया। अगर एससीओ और ब्रिक्स के भीतर ऐसे विरोधाभासों को संभाला जा सकता है तो उन्हें द्विपक्षीय स्तर पर भी संभाला जा सकता है। इस तरह की यथार्थवादी सोच के पीछे मजबूत आर्थिक कारण हैं। चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा लगभग 112 अरब डॉलर है। फिर भी हमारी निर्भरता मुख्यरूप से सस्ते खिलौनों पर नहीं है। चीन जरूरी एपीआई, इलेक्ट्रॉनिक पुर्जे, मशीनरी, सोलर इनपुट और प्रोसेस किए गए अहम खनिज सप्लाई करता है। गलवान के बाद भारत ने चीनी निवेश और तकनीक तक पहुंच को कड़ा कर दिया। फिर भी आयात बढ़ता रहा। राजनीतिक जुड़ाव कम करने की कोशिश से आर्थिक निर्भरता खत्म नहीं हुई। प्रवासी नेटवर्क जुड़ेंचीन के प्रति भारत का नजरिया किसी याचक जैसा नहीं है। चीन की आर्थिक ताकत्त जबरदस्त है लेकिन उसमें कुछ गंभीर कमजोरियां भी हैं। वहां की आबादी बूढ़ी हो रही है, वर्कफोर्स कम हो रहा है, प्रॉपर्टी सेक्टर मुश्किलों में है, कर्ज ज्यादा है, घरेलू खपत कमजोर है और जरूरत से ज्यादा इंडस्ट्रियल कैपेसिटी के लिए बाहरी बाजारों की जरूरत बढ़ रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष को उम्मीद है कि मध्यम अवधि में विकास दर धीमी रहेगी क्योंकि डेमोग्राफिक्स, कमजोर प्रोडक्टिविटी और निवेश पर घटता रिटर्न असर डालेंगे। इसलिए चीन को भी भारत की जरूरत है। भारत दुनिया के सबसे बड़े और तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है। यहां युवा वर्कफोर्स है और यह चीनी पूंजी के लिए एक विकल्प है जिसे दूसरी जगहों पर बढ़ती रुकावटों का सामना करना पड़ रहा है। सही प्रतिक्रिया यह नहीं है कि श्चीन को बाहर रखोश्व, बल्कि यह है कि अगर आप्रोस नोट 3 प्रतिशत पर बिना सोचे–समझे शक करने के बजाय जोखिम के आधार पर जांच की ओर बढ़ना चाहिए। टेलीकॉम नेटवर्क में चीन की भागीदारी, हाईवे, वेयरहाउस, पानी या सिंचाई प्रोजेक्ट में चीन की

सिर्फ पूंजी (कैपिटल) लगाने से साफ तौर पर अलग है। इसे अलग–थलग रहकर जुड़ाव (क्वारंटीन्ड एंगेजमेंट) कहा जा सकता है। राजनीति समाचार चीनी पर्यटकों, बिजनेस के लिए आने वालों, शिक्षाविदों और इंजीनियरों के लिए वीजा प्रक्रिया आसान बनाई जाए। ज्यादा सीधी उड़ानें फिर से शुरू की जाएं। चीनी पर्यटकों के लिए एक खास तीर्थ पर प्रमोट किया जाने वाला बौद्ध सर्किट– बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर और नालंदा– बनाया जाए। संवेदनशील न माने जाने वाले विषयों में यूनिवर्सिटी पार्टनरशिप को फिर से शुरू किया जाए। सिनेमा, खेल और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया जाए। मानवता का इतना बड़ा हिस्सा होने वाली दो सभ्यताओं के बीच बातचीत मुख्यरूप से सैनिकों, कस्टम अधिकारियों और राजनयिकों के जरिए ही नहीं होनी चाहिए। साथ ही, भारत को चीन के विशाल कंज्यूमर मार्केट तक पहुंच पाने पर कहीं ज्यादा जोर देना चाहिए। ट्रेड डेफिसिट (व्यापार घाटे) का समाधान सिर्फ चीनी आयात कम करना नहीं हो सकता। इसके बजाय चीन में भारतीय फार्मास्यूटिकल्स, खाद्य उत्पादों, सेवाओं, मनोरंजन और अन्य सामानों की पहुंच बढ़नी चाहिए। ईज ऑफ डूइंग बिजनेसश्व रैंकिंग खराब होने और पाश्चात्य शैली के लोकतांत्रिक संस्थानों की कमी के बावजूद चीन की जबरदस्त ग्रोथ यह याद दिलाती है कि उसे वैसा ही समझा जाना चाहिए जैसा वह है, न कि वैसा जैसा थ्योरी कहती है कि उसे होना चाहिए।

सुरेरी थाने में प्रशिक्षु कांस्टेबल की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। सुरेरी थाना परिसर में रविवार शाम तबीयत बिगड़ने से 2025 बैच के प्रशिक्षु कांस्टेबल अभिषेक सिंह की मौत हो गई। वह गोरखपुर जिले के सहजनवा थाना क्षेत्र के महुआपार गांव के निवासी थे। पुलिस के अनुसार, रविवार शाम करीब छह बजे अभिषेक की तबीयत अचानक बिगड़ गई। साथी पुलिसकर्मी उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, रामपुर ले गए, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। अभिषेक के परिजनों को सूचना दे दी गई है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मौत का कारण अभी स्पष्ट नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद स्थिति साफ होगी। घटना से पुलिस विभाग में शोक है।वही इस मामले में जानकारी लेने अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण आतिश कुमार सिंह ने बताया कि सिपाही की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत है मौके से दरवाजा अंदर से बंद था जांच पड़ताल की जा रही है पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद कोई बात कही जा सकती है।परिजनों को सूचना दे दिया गया है।0

विद्यार्थियों की समस्याओं के त्वरित समाधान को कुलपति की पहल

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव यूपी के जौनपुर में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की शिकायतों और समस्याओं के समयबद्ध एवं निष्पक्ष निस्तारण के लिए छात्र शिकायत निवारण समिति का गठन किया गया है। कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के निर्देश पर गठित समिति विद्यार्थियों की शिकायतों पर कार्रवाई कर उनके समाधान की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाएगी। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने हाल में कुलपति से मुलाकात कर विभिन्न समस्याएं बताई थीं। कुलपति ने समस्याओं को सुनकर शीघ्र समाधान का भरोसा दिया था। इसके बाद प्रशासन ने शिकायतों के निस्तारण के लिए समिति गठित की। डीएसडब्ल्यू प्रो. प्रमोद कुमार यादव को समिति का अध्यक्षध समन्वयक बनाया गया है। प्रो. अविनाश डी. पाथर्डीकर, प्रो. राजेश शर्मा, प्रो. रजनीश भास्कर और डॉ. अन्नू त्यागी को सदस्य बनाया गया है। एलएलएम छात्र अभिनव कीर्ति पाण्डेय को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार समिति विद्यार्थियों की शिकायतों पर आवश्यक कार्रवाई कर उनके समाधान की निगरानी करेगी। इससे छात्रों को अपनी समस्याओं के लिए संस्थागत मंच उपलब्ध होगा।। कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह विद्यार्थियों से सीधे संवाद करेंगे। मंगलवार और शनिवार को छोड़कर प्रत्येक कार्य दिवस में सुबह नौ से 10 बजे तक विद्यार्थी उनसे मिल सकेंगे। विद्यार्थी शैक्षणिक, प्रशासनिक, छात्रावास, परीक्षा, पुस्तकालय, खेलकूद और छात्र कल्याण सहित अन्य समस्याएं एवं सुझाव सीधे कुलपति के समक्ष रख सकेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार व्यवस्था का उद्देश्य विद्यार्थियों की समस्याओं का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना है। अनुसार समिति शिकायतों पर आवश्यक कार्रवाई कर उनके समाधान की निगरानी करेगी। इससे विद्यार्थियों को समस्याओं के निस्तारण के लिए संस्थागत मंच मिलेगा।

विश्व अल्जाइमर दिवस पर मंगल क्लीनिक में संगोष्ठी आयोजित

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। विश्व अल्जाइमर दिवस के अवसर पर सोमवार 21, सितंबर को मंगल क्लीनिक, वाजिदपुर तिराहा, जौनपुर में अल्जाइमर रोग एवं डिमेंशिया के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में चिकित्सक, क्लीनिक स्टाफ तथा मरीजों के परिजन उपस्थित रहे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए डॉ. उत्तम कुमार गुप्ता, मनोचिकित्सक, ने कहा कि अल्जाइमर डिमेंशिया का एक प्रमुख कारण है। इसमें व्यक्ति की याददाश्त, सोचने–समझने की क्षमता तथा दैनिक कार्य करने की क्षमता धीरे–धीरे प्रभावित हो सकती है। उन्होंने कहा कि भूलने की समस्या को केवल उम्र का सामान्य हिस्सा मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। लगातार भूलने, एक ही बात बार–बार पूछने, परिचित स्थानों पर रास्ता भूलने अथवा व्यवहार में बदलाव जैसे लक्षण दिखाई देने पर समय रहते चिकित्सकीय परामर्श लेना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अल्जाइमर रोग के प्रति जागरूकता बढ़ाकर इसकी शुरुआती पहचान और मरीजों की बेहतर देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। परिवार के सदस्यों को भी ऐसे मरीजों के प्रति धैर्य, संवेदनशीलता और सहयोग का व्यवहार करना चाहिए। कार्यक्रम में मैनेजर शशि भूषण पांडे, अजय चंद्र साहू, दिलीप, रमाकांत यादव, तघ्लोकी यादव, मोनी, अनुष्का, कविता, गुड़िया सहित क्लीनिक के अन्य स्टाफ तथा मरीजों के परिजन उपस्थित रहे। अंत में डॉ. उत्तम कुमार गुप्ता ने सभी उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अल्जाइमर और डिमेंशिया के प्रति जागरूकता ही समय पर पहचान, उचित उपचार और बेहतर देखभाल की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय से स्वस्थ समाज की दिशा में बढ़ा जौनपुर

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय तथा स्वस्थ जीवनशैली को लेकर कुंवर दास सेवा आश्रम हॉस्पिटल में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। लायंस क्लब जौनपुर 'गोमती' की ओर से आयोजित 'सम्पूर्ण संवाद' में दोनों चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञ एक मंच पर आए और लोगों को स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी। 'आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा रू स्वास्थ्य के दो आयामकृसम्पूर्ण संवाद' विषयक कार्यक्रम का उद्देश्य दोनों चिकित्सा पद्धतियों को लेकर लोगों की जिज्ञासाओं और भ्रांतियों को दूर करना तथा प्रमाणिक चिकित्सकीय जानकारी उपलब्ध कराना रहा। आधुनिक चिकित्सा की ओर से वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. राम अवध यादव, वरिष्ठ फिजिशियन डॉ. वी.एस. उपाध्याय और फिजिशियन डॉ. अंशु कुमारी ने समय पर जांच, उचित उपचार और चिकित्सकीय परामर्श के महत्व पर प्रकाश डाला। वहीं शकुंतला यादव आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज की प्राचार्या डॉ. बीना त्रिपाठी, डिप्टी मेडिकल सुप्रीटेंडेंट डॉ. अरुण कुमार तिवारी और वाइस प्रिंसिपल डॉ. जी.एस. यादव ने आयुर्वेद की जीवनशैली, आहार–विहार, दिनचर्या और रोगों से बचाव के उपाय बताए। विशेषज्ञों ने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए बीमारी का उपचार ही नहीं, बल्कि संतुलित खान–पान, नियमित व्यायाम, उचित दिनचर्या और समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण भी जरूरी है। किसी भी औषधि का सेवन चिकित्सक की सलाह से करने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. शंकुतला यादव ने कहा कि ऐसे संवाद आमजन और विशेषज्ञों के बीच सीधा संपर्क स्थापित करते हैं। लायंस क्लब 'गोमती' के उपाध्यक्ष शिवकुमार साहू की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में सचिव लायन नवीन मिश्रा सहित क्लब के पदाधिकारी, चिकित्सक और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। उपस्थित लोगों ने विशेषज्ञों से स्वास्थ्य संबंधी सवाल पूछे, जिनका चिकित्सकों ने समाधान किया।

मड़ियाहूं में ग्राम विकास अधिकारी पर रॉड–लाठी से हमला सरकारी दस्तावेज और डोंगल छीने

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के मड़ियाहूं कोतवाली क्षेत्र के रामपुर खास में सोमवार सुबह ग्राम विकास अधिकारी जयसिंह गुप्ता के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। आरोप है कि कुछ लोगों ने लोहे की रॉड और लाठी–डंडों से उन पर हमला किया। घटना में उनके भाई और भांजे के साथ भी मारपीट की गई। जयसिंह गुप्ता के मुताबिक, वह सोमवार सुबह पेट्रोल पंप की ओर जा रहे थे। इसी दौरान कुछ लोगों ने उनके साथ गाली–गलौज शुरू कर दी और मारपीट की। उन्होंने आरोप लगाया कि हमलावरों ने असलहा दिखाकर भी धमकाया। मारपीट में उनके सिर और पैरों में चोटें आईं और वह बेहोश हो गए। गुप्ता का आरोप है कि हमलावरों ने उनके सरकारी दस्तावेज और डोंगल छीनकर तोड़ दिए। इससे सरकारी कार्य प्रभावित हुआ है। उन्होंने विनोद जायसवाल और राज जायसवाल समेत कई नामजद तथा कुछ अज्ञात लोगों के खिलाफ मारपीट और धमकी देने का आरोप लगाया है। आरोप है कि उन्हें कट्टा दिखाकर जान से मारने की धमकी भी दी गई। घटना की जानकारी मिलने पर उनके भाई संतोष गुप्ता और भांजे प्रियांशु गुप्ता मौके पर पहुंचे, जहां उनके साथ भी मारपीट किए जाने का आरोप है। जयसिंह गुप्ता को ग्राम पंचायत हिनौती में आयोजित जन चौपाल में सरकारी कार्य से जाना था, लेकिन घटना के कारण वह वहां नहीं पहुंच सके। इस संबंध में क्षेत्राधिकारी मड़ियाहूं विजय चौधरी ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची थी। मामले की छानबीन की जा रही है। अभी तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने के बाद नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल पुलिस घटनास्थल पर जानकारी जुटा रही है।

विश्वकर्मा पूजा में बच्चों को प्रमाणपत्र देकर किया सम्मानित, सामाजिक युवाओं ने सराहा एकार्थी फाउंडेशन का आयोजन

देश की उपासना समाचार पत्र
धनन्जय विश्वकर्मा

मुंबई। भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा के पावन अवसर पर एकार्थी फाउंडेशन (रजि.) की ओर से गुरुवार, 17 सितंबर 2026 को नायगांव पूर्व स्थित श्री गंगाधर महादेव शिवालय, रश्मि पिंक सिटी, फेज–1, डॉन बॉस्को स्कूल के पीछे भव्य धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भगवान श्री विश्वकर्मा की विधि–विधान से पूजा–अर्चना, भजन–कीर्तन, भंडारा तथा बच्चों के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। आयोजन में क्षेत्र के श्रद्धालुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और युवाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभाशाली एवं सहभागी बच्चों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। फाउंडेशन की ओर से बच्चों को प्रोत्साहित करने की इस पहल की उपस्थित लोगों ने सराहना की। आयोजकों ने कहा कि बच्चों को सम्मानित करने का उद्देश्य उनमें प्रतिभा, सामाजिक सहभागिता और सकारात्मक कार्यों के प्रति उत्साह बढ़ाना है। कार्यक्रम में नालासोपारा से भाजपा के युवा नेता अमित दुबे ने पहुंचकर भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा–अर्चना की और एकार्थी फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा भारतीय परंपरा में निर्माण, शिल्प, वास्तुकला और सृजन के प्रतीक माने जाते हैं। उन्होंने विश्वकर्मा पूजा के सामाजिक एवं धार्मिक महत्व पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं भी व्यक्त कीं। वहीं शिवसेना शहर प्रमुख सुनील सिंह ने भी कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए आयोजन की व्यवस्थाओं की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से श्रद्धालुओं के लिए किए गए भंडारे एवं भोजन की व्यवस्था का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि धार्मिक आयोजन के साथ श्रद्धालुओं के लिए भोजन की व्यवस्था करना सेवा का महत्वपूर्ण कार्य है। कार्यक्रम के दौरान भजन–कीर्तन से वातावरण भक्तिमय बना रहा और श्रद्धालु धार्मिक माहौल में भाव–विभोर नजर आए। आयोजन के दौरान भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा–अर्चना के बाद श्रद्धालुओं के लिए भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। फाउंडेशन के सदस्यों और स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। एकार्थी फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश विश्वकर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, श्रद्धालुओं, सामाजिक युवाओं और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज को जोड़ने और युवाओं को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा। कार्यक्रम में सलाहकार राजेन्द्र विश्वकर्मा, राजमणि विश्वकर्मा, बच्चन विश्वकर्मा, सुनील विश्वकर्मा, धर्मेंद्र यादव, संतोष प्रजापति, पत्रकार धनन्जय विश्वकर्मा, विजय विश्वकर्मा, अजय विश्वकर्मा सहित फाउंडेशन के पदाधिकारी, सदस्य एवं क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। आयोजन के समापन पर उपस्थित लोगों ने एकार्थी फाउंडेशन की धार्मिक, सामाजिक एवं बच्चों को प्रोत्साहित करने वाली पहल की सराहना की। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम पूजा–अर्चना, सेवा, सम्मान और सामाजिक सहभागिता का संगम रहा।

'प्रधानाचार्य भर्ती में प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापकों को अनुभव के आधार पर बीएड प्रशिक्षण से छूट प्रदान की जाए–संजय द्विवेदी'

लखनऊ। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश मंत्री संजय द्विवेदी ने प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापकों को अनुभव के आधार पर बी.एड. के प्रशिक्षण से छूट प्रदान करने की मांग की है। मुख्यमंत्री व शिक्षा निदेशक माध्यमिक को लिखें में उन्होंने कहा है कि 03 सितंबर 2026 को सरकार द्वारा संशोधित की गई अर्हता में बदलाव किया जाय। पत्र में श्री द्विवेदी ने लिखा है कि परास्नातक में 50 प्रतिशत अंकों की अनिवार्यता को समाप्त किया जाए। नियमानुसार पूर्व से नियुक्त प्रवक्ता एवं सहायक अध्यापकों को अनुभव के आधार पर बी.एड. के प्रशिक्षण से छूट प्रदान की जाए। बीएड के समकक्ष (एल. टी. आदि) प्रशिक्षणों को संस्था प्रधान के पद के लिए स्वीकार किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं प्रधानाध्यापक के लगभग ढाई हजार रिक्त पदों पर लगभग 13 वर्ष के बाद उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के द्वारा लिखित परीक्षा के माध्यम से भर्ती की तैयारी की जा रही है। उन्होंने कहा कि चयन आयोग इन विद्यालयों के शिक्षकों और संस्था प्रधान के सभी रिक्त पदों को परीक्षाएं आयोजित करा कर शीघ्र से शीघ्र भरना चाहते हैं, किंतु शासन और माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारी विज्ञापन से ठीक पूर्व 03 सितंबर 2026 को प्रधानाचार्य व प्रधानाध्यापक की अर्हता में अचानक और अनावश्यक संशोधन करके इन विद्यालयों में कार्यरत बड़ी संख्या में शिक्षकों को परीक्षा में आवेदन करने ध सम्मिलित होने से वंचित कर देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारी इन संशोधनों के पीछे एनसीटीई के गाइडलाइन होने का तर्क दे रहे हैं जबकि एनसीटीई ने प्रधानाचार्य और प्रधानाध्यापक के पदों के लिए आज तक कोई गाइडलाइन जारी ही नहीं किया है। उन्होंने कहा कि इन अधिकारियों को बखूबी पता है कि उनके द्वारा किए गए इस संशोधन के कारण मा. उच्च न्यायालय में सैकड़ो याचिकाएं योजित होंगी और संस्था प्रधान की भर्ती प्रक्रिया वर्षों के लिए ठप हो जाएगी। यह अधिकारी अपने आप को सर्वज्ञानी और तानाशाह समझते हैं। ये न तो शिक्षकों की माँगों को सुनना चहते हैं और न ही शिक्षक संघ के प्रतिनिधियों से कोई वार्ता या परामर्श करना चाहते हैं।

शिक्षकों ने सेवा सुरक्षा और सम्मानजनक मानदेय की मांग को लेकर मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में अशासकीय अनुदानित महाविद्यालय/विश्वविद्यालय स्ववित्तपोषित शिक्षक संघ ने सेवा सुरक्षा, सम्मानजनक मानदेय और सेवा विनियमन की मांग को लेकर सोमवार को जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को ज्ञापन भेजा। शिक्षकों ने ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट महिपाल सिंह को सौंपा है।शिक्षक संघ ने शिक्षक कैशलेस चिकित्सा योजना के सांकेतिक बहिष्कार की घोषणा करते हुए सरकार से हस्तक्षेप की मांग की। संघ के अनुसार, प्रदेश के 331 अनुदानित महाविद्यालयों में वर्ष 2000 से संचालित स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों में करीब तीन हजार असिस्टेंट प्रोफेसर कार्यरत हैं। शिक्षक पिछले नौ वर्षों से नियमितीकरण या यूजीसी वेतनमान के साथ सेवा सुरक्षा की मांग कर रहे हैं, लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हुआ। संघ ने स्पष्ट किया कि वह कैशलेस चिकित्सा योजना का विरोध नहीं कर रहा है। 25 वर्षों से लंबित सेवा संबंधी समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए योजना का सांकेतिक बहिष्कार किया जा रहा है। संघ ने कहा कि स्वास्थ्य सुरक्षा के साथ रोजगार और सेवा सुरक्षा भी शिक्षकों के सम्मानजनक जीवन के लिए जरूरी है। शिक्षकों ने स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों की दोहरी व्यवस्था समाप्त कर संबंधित विषयों को अनुदान पर लेने, यूजीसी मानकों के अनुरूप योग्य शिक्षकों की सेवाओं को विनियमित या संरक्षित करने तथा वैकल्पिक रूप से यूजीसी वेतनमान के अनुरूप निश्चित और सम्मानजनक मानदेय के साथ सेवा सुरक्षा देने की मांग की। संघ के अनुसार, पिछले चार वर्षों में शासन, जनप्रतिनिधियों और विभिन्न समितियों को कई ज्ञापन दिए जा चुके हैं। उच्च शिक्षा मंत्री, विधान परिषद और विधानसभा में भी यह मुद्दा उठाया गया है। ज्ञापन देने वालों में अध्यक्ष डॉ. सुशील कुमार मिश्रा, महामंत्री डॉ. संतोष कुमार पांडेय, डॉ. ओम प्रकाश दुबे, डॉ. मृत्युंजय मिश्रा, डॉ. त्रिपुरारी उपाध्याय, डॉ. गुंजन मिश्रा, डॉ. संतोष तिवारी, डॉ. सुधाकर शुक्ला, डॉ. महेंद्र प्रताप सिंह डॉ विक्रम प्रताप सिंह और डॉ. प्रवीण कुमार सिंह समेत कई शिक्षक शामिल रहे।

'आई आर इण्टर कॉलेज सण्डीला में विधायक अलका अर्कवंशी की मौजूदगी में चित्रकला प्रतियोगिता का हुआ आयोजन'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'हरदोई' जिला विद्यालय निरीक्षक के निर्देशानुसार जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में 'मेरे सपनों का भारत' थीम पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें अपने सपनों के भारत की कल्पना को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना है। जिला विद्यालय निरीक्षक की ओर से सभी माध्यमिक विद्यालयों को प्रतियोगिता में अनिवार्य रूप से प्रतिभाग कराने के निर्देश दिए गए थे। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों को निर्धारित चार्ट पेपर पर अपने विचारों और कल्पनाओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करना था। विद्यालय स्तर पर प्राप्त चित्रों में से उत्कृष्ट तीन चित्रों का चयन कर उन्हें सुरक्षित रखने के भी निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में आई आर इण्टर कॉलेज, संडीला एवं पाली के सेठ बाबूराम भारतीय इण्टर कालेज में भी 'मेरे सपनों का भारत' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हुए भारत के उज्ज्वल भविष्य, शिक्षा, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, आधुनिक विकास, महिला सशक्तिकरण सहित विभिन्न विषयों को अपनी चित्रकला के माध्यम से प्रदर्शित किया। सण्डीला के आई आर इण्टर कालेज में कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक अलका अर्कवंशी की मौजूदगी ने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया। विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य अजय शुक्ला ने विधायक को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया। विधायक ने विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए चित्रों का अवलोकन करते हुए उनकी रचनात्मक प्रतिभा की सराहना की तथा उन्हें निरंतर अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। प्रतियोगिता के माध्यम से छात्र–छात्राओं ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि उनका सपना एक ऐसे भारत का निर्माण है, जो शिक्षा, विकास, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और समान अवसरों के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़े। विद्यालय परिसर में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों में खासा उत्साह देखने को मिला। सभी प्रतिभागियों ने अपनी कल्पनाशीलता और कला–कौशल का प्रदर्शन करते हुए चार्ट पेपर पर आकर्षक चित्र बनाए। विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट तीन चित्रों का चयन कर उन्हें सुरक्षित रखा गया, ताकि विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रोत्साहन मिल सके। कार्यक्रम के दौरान आई आर इण्टर कालेज सण्डीला एवं सेठ बाबूराम भारतीय इण्टर कॉलेज पाली का समस्त स्टाफ मौजूद रहा। विद्यालय स्टॉफ एवं शिक्षकों ने प्रतियोगिता को सफल बनाने में सहयोग किया और विद्यार्थियों को भविष्य में भी इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

'सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत स्वच्छता जागरूकता रैली का शुभारंभ'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'हरदोई' जिलाधिकारी, जिला पंचायत अध्यक्ष एवं भाजपा जिलाध्यक्ष ने कलेक्ट्रेट से हरी झंडी दिखाकर रैली को किया रवाना सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जनपद में स्वच्छता के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से स्वच्छता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ जिलाधिकारी अनुनय झा, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती एवं भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस अवसर पर स्वच्छता जागरूकता वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। रैली के माध्यम से आमजन को स्वच्छता बनाए रखने, अपने आसपास के क्षेत्र को साफ–सुथरा रखने तथा स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी निभाने का संदेश दिया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने घर, मोहल्ले एवं आसपास के सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखने में सहयोग करें तथा स्वच्छता को अपनी दैनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाएं। रैली के दौरान स्वच्छता कर्मियों द्वारा जनसामान्य को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा स्वच्छता अभियान को जनभागीदारी के साथ आगे बढ़ाने का संदेश दिया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी नेहा ब्याडवाल, नगर मजिस्ट्रेट संजय कुमार, जिला विकास अधिकारी कमलेश कुमार, जिला पंचायतराज अधिकारी श्रेया उपाध्याय सहित सम्बन्धित अधिकारी तथा स्वच्छता कर्मी उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा महापूजा में भक्ति के साथ सेवा और प्रतिभा को मिला सम्मान

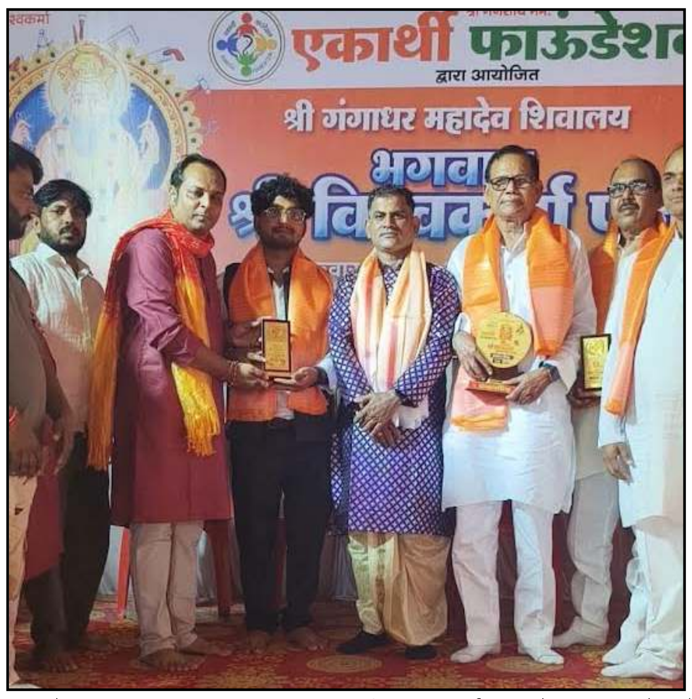

देश की उपासना समाचार पत्र
मुम्बई ब्यूरो चीफ
धनन्जय विश्वकर्मा।

नायगांव, (पालघर) रू भगवान श्री विश्वकर्मा के पावन पूजनोत्सव के अवसर पर एकार्थी फाउंडेशन (रजि.) की ओर से गुरुवार, 17 सितंबर 2026 को नायगांव पूर्व स्थित श्री गंगाधर महादेव शिवालय परिसर में भव्य धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन घर हो ऐसा संस्कार ट्रस्ट द्वारा संचालित रश्मि पिंक सिटी, फेज–1, डॉन बॉस्को स्कूल के पीछे किया गया। कार्यक्रम में भगवान श्री विश्वकर्मा की विधि–विधान से पूजा–अर्चना के साथ भजन–कीर्तन, स्वास्थ्य जांच शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बच्चों की कला एवं प्रतिभा प्रदर्शन तथा भंडारे का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, युवाओं और स्थानीय नागरिकों ने सहभागिता की। दोपहर में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर में लोगों ने स्वास्थ्य परीक्षण कराया। आयोजन के माध्यम से धार्मिक आस्था के साथ स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक सेवा का संदेश भी दिया गया। बच्चों ने ड्रॉइंग, कला प्रदर्शन और डांस सहित विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाई। बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए एकार्थी फाउंडेशन की ओर से सभी सहभागी बच्चों को प्रमाणपत्र और उपहार देकर सम्मानित किया गया। आयोजकों ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता, प्रतिभा, सामाजिक सहभागिता और सकारात्मक गतिविधियों के प्रति रुचि बढ़ाना है। समारोह में इंडियन आर्मी के सेक्शन कमांडर मोनू यादव, उत्तर प्रदेश से पहुंचे कॉमेडियन एवं डिजिटल क्रिएटर 'लंगड़ी बुआ' के नाम से प्रसिद्ध रिंकू विश्वकर्मा, कादीपुर विधानसभा के विधायक भगेलूराम, समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव राम सूरत प्रजापति, बथुआ सुल्तानपुर के पूर्व प्रधान बांगरखुर्द करौंदीकलां, सुलतानपुर के प्रधान राजेश विश्वकर्मा, समाजसेवी मनोज विश्वकर्मा, ओम प्रकाश मौर्य, नालासोपारा दुबे स्टेट से अमित दुबे, ओमकार हॉस्पिटल के मालिक डॉ. मनोहर सुथार, शिवसेना शहर प्रमुख नायगांव सुनील सिंह, साईं दुर्गा मित्र मंडल अध्यक्ष एवं युवा कार्यकर्ता चेतन घरत, नायगांव पुलिस के देवीदास पाटिल, राम यादव, भाजपा नेता धर्मेंद्र मिश्रा, प्रमोद तिवारी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। अतिथियों ने भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा–अर्चना कर आयोजन की सराहना की। वक्ताओं ने विश्वकर्मा पूजा को भारतीय परंपरा में निर्माण, शिल्प, वास्तुकला और सृजन से जुड़ी आस्था का महत्वपूर्ण पर्व बताया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर भी शुभकामनाएं दी गईं। अतिथियों ने श्रद्धालुओं के लिए की गई भोजन एवं भंडारे की व्यवस्था को सेवा भावना का महत्वपूर्ण उदाहरण बताया।

भजन–कीर्तन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से कार्यक्रम स्थल पूरे समय भक्तिमय बना रहा। पूजा–अर्चना के बाद आयोजित भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। फाउंडेशन के पदाधिकारियों, सदस्यों और स्वयंसेवकों ने आयोजन की व्यवस्थाओं में सक्रिय योगदान दिया। एकार्थी फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश विश्वकर्मा ने सभी अतिथियों, श्रद्धालुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, युवाओं, स्वयंसेवकों और सहयोगियों के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज को जोड़ने तथा युवाओं को सकारात्मक दिशा देने के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा। आयोजन को सफल बनाने में अध्यक्ष दिनेश विश्वकर्मा,उपाध्यक्ष विजय विश्वकर्मा, सचिव रामकुमार विश्वकर्मा, ज्वाइंट सेक्रेटरी राजेन्द्र विश्वकर्मा, उप सचिव आशुतोष गुप्ता, सलाहकार राजमणि विश्वकर्मा, कोषाध्यक्ष सुनील विश्वकर्मा, उप कोषाध्यक्ष बच्चन विश्वकर्मा, ज्वाइंट ट्रेजरर धर्मदेव यादव, कार्यकारिणी सदस्य संतोष प्रजापति, मीडिया प्रभारी पत्रकार धनन्जय विश्वकर्मा, अजय विश्वकर्मा, सलाहकार कैलाश विश्वकर्मा, तेजबहादुर विश्वकर्मा, छोटेलाल विश्वकर्मा, विवेक प्रजापति सहित फाउंडेशन के अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। समापन पर उपस्थित लोगों ने एकार्थी फाउंडेशन की धार्मिक आयोजन के साथ सामाजिक सेवा, स्वास्थ्य जागरूकता और बच्चों की प्रतिभा को मंच देने वाली पहल की सराहना की। विश्वकर्मा महापूजा का यह आयोजन आस्था, सेवा, प्रतिभा सम्मान और सामाजिक सहभागिता का समन्वित स्वरूप बनकर सामने आया।

'आयुर्वेद से स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का संकल्प'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'शाहजहाँपुर' आयुर्वेद दिवस की इस वर्ष की थीम "स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद" के अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय प्रांगण स्थित इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन के जिलाध्यक्ष एवं इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी शाखा के सचिव डॉ विजय जौहरी पूर्व शिक्षक बुंदेलखंड राजकीय आयूर्वेस मेडिकल कॉलेज झाँसी ने कहा कि आयुर्वेद भारत की प्राचीन चिकित्सा परंपरा ही नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य, स्वस्थ जीवनशैली और स्वस्थ राष्ट्र की भारतीय सोच का महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने कहा कि 23 सितंबर को प्रतीकात्मक रूप से देखें तो 3 को आयुर्वेद के त्रिदोषकृ वात, पित्त और कफ तथा 2 को समता एवं संतुलन के भाव से जोड़ा जा सकता है। 2 और 3 मिलकर 5 होते हैं, जो पंचमहाभूत की अवधारणा की ओर संकेत करते हैं। इसी क्रम में 7 को सप्तधातु और 8 को आयुर्वेद के अष्टांग से प्रतीकात्मक रूप से समझा जा सकता है।

डॉ जौहरी ने कहा कि तिरंगा राष्ट्रभावना और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। उसके तीन रंगों को आयुर्वेद की दृष्टि से प्रतीकात्मक रूप में त्रिदोषकृवात, पित्त और कफ से जोड़कर देखा जा सकता है। जिस प्रकार त्रिदोषों का संतुलन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक माना गया है, उसी प्रकार राष्ट्र के विभिन्न वर्गों और समुदायों में समन्वय एवं संतुलन राष्ट्र की शक्ति को मजबूत करता है।

उन्होंने कहा कि तिरंगे के मध्य स्थित अशोक चक्र की 24 तीलियां भी भारतीय ज्ञान–परंपरा की दृष्टि से विशेष आकर्षण रखती हैं। भारतीय तत्त्वचिंतन में 24 तत्त्वों की अवधारणा मिलती है। आयुर्वेद के संदर्भ में इसे प्रकृति, शरीर और जीवन की संरचना को समझने वाली भारतीय ज्ञान–परंपरा के प्रतीकात्मक संदर्भ के रूप में देखा जा सकता है।

डॉ जौहरी ने कहा कि यह तुलना किसी एक शास्त्रीय सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए नहीं, बल्कि अच्छे कार्य के लिए अच्छे प्रतीकों से प्रेरणा लेने का प्रयास है। तिरंगा जहां राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रधर्म की भावना जगाता है, वहीं आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज के निर्माण का संदेश देता है। दोनों भावनाओं को साथ लेकर चलना राष्ट्रस्वास्थ्य की दिशा में सकारात्मक प्रयास है।

उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान, संस्थानों और प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों का दायित्व है कि वे इसकी प्रमाणित एवं उपयोगी स्वास्थ्य अवधारणाओं को जन–जन तक पहुंचाएं।

उन्होंने कहा कि जहां भी जनस्वास्थ्य की बात होगी, वहां आयुर्वेद की स्वस्थ जीवनशैली की बात होगीय और जहां राष्ट्रस्वास्थ्य की बात होगी, वहां स्वस्थ नागरिक की भूमिका भी सामने आएगी। आहार, दिनचर्या, योग, व्यायाम, स्वच्छता और प्रकृति के अनुरूप जीवनशैली को अपनाकर स्वस्थ भारत के निर्माण में प्रत्येक नागरिक योगदान दे सकता है।

डॉ जौहरी ने कहा कि आयुर्वेद दिवस का संकल्प केवल आयुर्वेद के प्रचार तक सीमित न रहकर "स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र" की भावना को जन–जन तक पहुंचाने का अभियान बनना चाहिए।उन्होंने बताया कि भारत सरकार ने मार्च 2025 में राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से 23 सितंबर को प्रत्येक वर्ष आयुर्वेद दिवस मनाने के लिए निश्चित तिथि घोषित की। इससे पहले आयुर्वेद दिवस धनतेरस अर्थात भगवान धन्वंतरि जयंती के अवसर पर मनाया जाता था, जिसकी तिथि प्रतिवर्ष बदलती रहती थी।

बैठक में डॉ एस.पी. कौशल, डॉ हितेश गुप्ता, डॉ. रवि सक्सेना, जिला चिकित्सालय के आयुष विभाग के चिकित्सा अधिकारी डॉ राजेंद्र कुशवाहा ने योग एवं आयुर्वेद पर आधारित एक पत्रिका डॉक्टर विजय जोहरी को भेंट की इस अवसर पर ओम दिव्यांग कल्याण समिति के बालकृष्ण पांडेय, बृजेश गुप्ता, रवि वर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बैठक में निर्णय लिया गया कि 23 सितंबर को आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से "स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद" के संदेश को जन–जन तक पहुंचाते हुए आयुर्वेद की संतुलित जीवनशैली, रोग–निवारण, आहार–विहार, योग एवं जनस्वास्थ्य में भूमिका के प्रति लोगों को जागरूक किया जाएगा।

महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट में जमीन जाने वाले किसानों ने की पीएम शहरी आवास की मांग,डीएम को दिया प्रार्थना पत्र

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या।महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट के लिए जमीन जाने से बेघर हुए किसानों ने प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना का लाभ दिलाने के लिए जिलाधिकारी अयोध्या को प्रार्थना पत्र सौंपा है।धरमपुर के किसानों का कहना है कि एयरपोर्ट निर्माण के लिए उनकी जमीन ली गई थी। तत्कालीन जिलाधिकारी के निर्देश पर कुछ किसानों को पीएम शहरी आवास का लाभ दिया गया, लेकिन कई पात्र किसान आज भी वंचित हैं।किसानों ने बताया कि क्षेत्रीय लेखपाल द्वारा पात्रों की सूची तहसील सदर से एसडीएम कार्यालय को भेज दी गई है, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।किसानों का आरोप है कि तहसील प्रशासन द्वारा सूची को दबाकर रखा गया है और सही जवाब नहीं दिया जा रहा है।जमीन लेते समय किए गए वादों से अब प्रशासन मुकर रहा है।इस मामले में जिलाधिकारी ने संज्ञान लेते हुए जांच के आदेश दिए हैं और पात्र वंचित किसानों को जल्द पीएम आवास का लाभ दिलाने का आश्वासन दिया है।

एड्स से बचाव को लेकर सामुदायिक कार्यक्रम,नुक्कड़ नाटक के जरिए किया जागरूक

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्याउत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति, लखनऊ द्वारा प्रायोजित लक्षित हस्तक्षेप परियोजना के तहत सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का आयोजन प्रताप सेवा समिति की ओर से तरजीपुरम कॉलोनी में श्याम लाल निषाद के आवास पर किया गयाकार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व सीएमओ डॉ. नानकसरन निषाद और खाकी वाले गुरुजी रणजीत यादव शामिल हुए। इस दौरान मौजूद लोगों को एचआईवीध्एड्स जैसी गंभीर बीमारी से बचाव और रोकथाम को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।कार्यक्रम में लोगों को एड्स के संक्रमण के कारण, बचाव के उपाय और जागरूकता के महत्व के बारे में सरल भाषा में समझाया गया। वहीं, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी लोगों को मनोरंजक एवं प्रभावी तरीके से एचआईवीध्एड्स से बचाव और इससे जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने की जानकारी दी गई।आयोजकों ने कहा कि एचआईवीध्एड्स को लेकर जागरूकता ही बचाव का महत्वपूर्ण माध्यम है। समाज के प्रत्येक वर्ग तक सही जानकारी पहुंचाकर इस बीमारी के प्रति फैली भ्रांतियों को दूर किया जा सकता है।

रनिंग स्टाफ की लंबित मांगों को लेकर लोको पायलटों का प्रदर्शन

अयोध्या।ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन की मंडलीय कार्यकारिणी के आह्वान पर उत्तर रेलवे अयोध्या कैंट में रनिंग स्टाफ की विभिन्न लंबित मांगों और समस्याओं को लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया।इस मौके पर अंजनी कुमार की अध्यक्षता में हुए प्रदर्शन में कर्मचारियों ने समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग उठाई।प्रदर्शन के दौरान कार्यरत लोको रनिंग स्टाफ से स्टेशन के यार्ड मैप बनवाने का विरोध किया गया।मंडल की सभी मेमो गाड़ियों में सहायक लोको पायलट उपलब्ध कराने, परिचालन विभाग के कुप्रबंधन के कारण आउट स्टेशन रेस्ट बढ़ने और मुख्यालय रेस्ट क होने की समस्या दूर करने की मांग की गई।संगठन

ने चिकित्सीय रूप से अनफिट रनिंग स्टाफ को निर्धारित प्रक्रिया के तहत अस्थायी वैकल्पिक पद पर नियुक्त करने, लॉन्ग रिजर्व के कारण अवकाश नहीं देने तथा अनुपस्थिति पर आरोप पत्र और दंड की कार्रवाई का विरोध किया। इसके अलावा दो वर्ष की सेवा पूरी कर चुके 50 प्रतिशत एलपीएस को तत्काल सीनियर एलपीएस में अपग्रेड करने,एलपीजी ध्एलपीपीध्एलपीएम के रिक्त पद भरने तथा रनिंग लाइन के बगल में लॉन्ग हॉल बनाने से पहले पर्याप्त रोशनी और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग उठाई गई।

प्रदर्शन में अंजनी कुमार, वरुण यादव, राम प्रकाश, ओपी मौर्य, राजेंद्र यादव, बब्बू यादव, शिवनाथ मौर्य, संजय कुमार, प्रवीण कुमार, राजेंद्र यादव एलपीजी, शिव मंदिर पाल, वीरेंद्र कुमार, आशुतोष चौरसिया, अशोक वर्मा, करुणेश शर्मा सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

विश्वकर्मा पूजा महोत्सव में धार्मिक अनुष्ठान के साथ मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

देश की उपासना समाचार पत्र
मुम्बई ब्यूरो चीफ
धनन्जय विश्वकर्मा

वसई। श्री विश्वकर्मा चौरिटेबल संस्था, वसई पश्चिम की ओर से स्वामीनारायण मंदिर परिषद में भगवान श्री विश्वकर्माजी की पूजा के उपलक्ष्य में दो दिवसीय विश्वकर्मा पूजा महोत्सव का आयोजन किया गया। 17 एवं 18 सितंबर 2026 को आयोजित महोत्सव में विधिवत पूजा–अर्चना, कथा, आरती, महाआरती, मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान, महाप्रसाद एवं भंडारा तथा भगवान श्री विश्वकर्माजी की मूर्ति विसर्जन सहित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। महोत्सव का शुभारंभ 17 सितंबर को सुबह 9 बजे भगवान श्री विश्वकर्माजी की विधिवत पूजा–अर्चना, कथा एवं आरती के साथ हुआ। इसके पश्चात दोपहर में महाआरती का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शाम को आयोजित शिक्षा सम्मान समारोह में कक्षा 10वीं, 12वीं तथा 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। संस्था की ओर से विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इसके बाद शाम 8 बजे से रात 10 बजे तक महाप्रसाद एवं भंडारे का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, समाज के लोगों तथा अतिथियों ने सहभागिता करते हुए प्रसाद ग्रहण किया। धार्मिक वातावरण में हुआ मूर्ति विसर्जन

महोत्सव के दूसरे दिन 18 सितंबर को सुबह 10 बजे भगवान श्री विश्वकर्माजी की मूर्ति का विधिवत विसर्जन किया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने धार्मिक उत्साह के साथ भगवान श्री विश्वकर्माजी के जयकारे लगाए और भावपूर्ण वातावरण में मूर्ति को विदाई दी।

प्रमुख अतिथियों की रही उपस्थिति

कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी की विधायक श्रीमती स्नेहा दुबे पांडित, भाजपा युवा नेता अमित दुबे सहित पार्टी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। वहीं बहुजन विकास आघाड़ी के विधायक हितेंद्र ठाकुर, सभापति उमा पाटिल सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

धार्मिक अनुष्ठान पं. रमेश शिवि आचार्य के मार्गदर्शन में संपन्न कराया गया।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय संस्था

श्री विश्वकर्मा चौरिटेबल संस्था धार्मिक आयोजनों के साथ सामाजिक एवं जनसेवा के क्षेत्र में भी विभिन्न गतिविधियों का संचालन करती है। संस्था की ओर से निःशुल्क रक्त जांच लैब एवं चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराने की जानकारी दी गई।

संस्था द्वारा वर्षभर वृक्षारोपण, योग दिवस, रक्त जांच एवं स्वास्थ्य जांच शिविर, श्रमदान, जरूरतमंद एवं अनाथ बच्चों की सहायता, विद्यार्थियों का शिक्षा सम्मान तथा अन्य जनकल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

पदाधिकारियों और समाजसेवियों की सहभागिता

महोत्सव में संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र शिवनाथ विश्वकर्मा, उपाध्यक्ष राधेश्याम विश्वकर्मा, रामस्वरूप राणा, अखिलेश विश्वकर्मा, सूर्य नारायण ठाकुर, प्रेम चन्द मिश्रा (लक्ष्मी ट्रांसपोर्ट, सातीवली), अवध शर्मा, चन्द्रकान्त, रविन्द्र, मनोज झा, मेवालाल विश्वकर्मा, काली प्रसाद प्रजापति, भागीरथी मिस्त्री एवं सत्यनारायण विश्वकर्मा सहित संस्था के पदाधिकारी, सदस्य, समाजसेवी एवं बड़ी संख्या में समाज के लोग उपस्थित रहे।

संस्था के पदाधिकारियों ने स्वामीनारायण मंदिर परिषद में विश्वकर्मा पूजा महोत्सव के आयोजन में सहयोग के लिए मंदिर परिषद के सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मंदिर परिषद के सहयोग से भगवान श्री विश्वकर्माजी का पूजा महोत्सव धार्मिक श्रद्धा और सामाजिक सहभागिता के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

संस्था के पदाधिकारियों ने कहा कि धार्मिक आयोजनों के साथ सामाजिक सेवा तथा जरूरतमंद वर्गों की सहायता करना संस्था के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है। महोत्सव के सफल आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी अतिथियों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं श्रद्धालुओं के प्रति संस्था की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

'मातृभूमि योजना के तहत बनेगा "श्री अंजनी पांडेय पुस्तकालय एवं वाचनालय"'

'प्रतापगढ़,। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतापगढ़ निवासी, पूर्व कमिश्नर और बेल्हा मेल फाउंडेशन के संस्थापक श्री अंजनी कुमार पांडेय अपने पैतृक गांव प्रेमधर पट्टी, रानीगंज विधानसभा में पुस्तकालय एवं वाचनालय का निर्माण करा रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार की मातृभूमि योजना के तहत ग्राम पंचायत प्रेमधर पट्टी, विकास खंड बाबाबेलखरनाथ धाम, रानीगंज विधानसभा, जनपद प्रतापगढ़ में यह पुस्तकालय तैयार किया जा रहा है। इसका नाम "श्री अंजनी पांडेय पुस्तकालय एवं वाचनालय" होगा। पूर्व आईआरएस अधिकारी श्री अंजनी कुमार पांडेय ने कहा, षजिस गांव की मिट्टी ने हमें पहचान दी, वहां के बच्चों और युवाओं के भविष्य के लिए कुछ कर पाना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इसी भावना के साथ अपने पैतृक गांव प्रेमधर पट्टी, रानीगंज विधानसभा में पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना का संकल्प लिया है।" उन्होंने कहा कि गांव के बच्चों और युवाओं को पढ़ाई के लिए बेहतर

माहौल और जरूरी संसाधन उपलब्ध कराना इस पहल का मुख्य उद्देश्य है। पुस्तकालय केवल किताबें रखने की जगह न होकर विद्यार्थियों के लिए पढ़ने, सीखने और आगे बढ़ने का साझा केंद्र बने, यही उनकी कोशिश है। खास तौर पर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को गांव में ही शांत और बेहतर अध्ययन का वातावरण मिल सके, इस दिशा में यह पुस्तकालय उपयोगी साबित होगा। श्री अंजनी कुमार पांडेय 2010 बैच के आईआरएस (इंडियन रेवन्यू सर्विसेज) अधिकारी रहे हैं। प्रतापगढ़ में जन्में और पले–बढ़े अंजनी पांडेय जी अपने गृहजनपद प्रतापगढ़ विशेषकर अपने गांव से बेहद लगाव रखते हैं। सामाजिक कार्यों विशेष रुप से चाइल्ड एजुकेशन को लेकर उनकी विशेष सक्रियता रहती है। इस पुस्तकालय के निर्माण लागत राशि का 60 प्रतिशत योगदान श्री अंजनी कुमार पांडेय की ओर से जमा करा दिया गया है, जबकि शेष 40 प्रतिशत धनराशि राज्य सरकार की ओर से उपलब्ध कराई जाएगी। मातृभूमि योजना के तहत किसी व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह या निजी संस्था द्वारा ग्राम पंचायत में विकास कार्य या अवस्थापना सुविधा के निर्माण में सहयोग किया जा सकता है। योजना के प्रावधानों के अनुसार परियोजना की लागत का 60 प्रतिशत सहयोगकर्ता द्वारा वहन किए जाने और शेष 40 प्रतिशत राशि राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए जाने की व्यवस्था है। सहयोगकर्ता की इच्छा के अनुसार परियोजना का नाम रखने और निर्धारित स्थान पर सहयोगकर्ता का नाम प्रदर्शित करने का भी प्रावधान है।

राकेश यादव बने ग्रामीण पत्रकार संगठन इकाई बीकापुर के अध्यक्ष

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या। काफी लगभग घंटो चली हाई वोल्टेज मीटिंग के बाद राकेश यादव को सर्वसम्मत से ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन बीकापुर इकाई का नया अध्यक्ष चुने गये। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन बीकापुर के रहे तीन बार अध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार स्वर्गीय अशोक कुमार वर्मा के आकस्मिक निधन पर यह पद खाली चल रहा था। जिसकी भरपाई राकेश यादव को तहसील इकाई का अध्यक्ष बनाकर पूरी कर दी गई। स्वर्गीय अशोक कुमार वर्मा अपने कार्यकाल के दौरान तीन बार ग्रामीण पत्रकार सम्मेलन भी करवाया था।और उनके जीते जी बड़ी संख्या में इस संगठन से पदाधिकारी और सदस्य भी जुड़े थे। नव निर्वाचित तहसील अध्यक्ष को जो यह जिम्मेदारी सौंपी गई है अब देखने वाली बात यह होगी कि उसका निर्वहान यह किस प्रकार करेंगे।संगठन में आपसी सामंजस और तालमेल बनाकर चलने की जरूरत है। संगठन

को चौबीसों घंटे एक्टिव रहना होगा।पत्रकारों के हित की रक्षा करनी होगी।जो पत्रकार साथी नाराज चल रहे हैं उनको फिर से एक बार एकजुट किया जाएगा। नवंबर के प्रथम सप्ताह में तहसील इकाई बीकापुर का सम्मेलन भी कराने पर विचार किया जाएगा।उक्त बातें नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश यादव ने बताई उन्होंने यह भी बताया की पूर्व अध्यक्ष अशोक वर्मा जी का जो सपना था उसको हम अवश्य पूरा करेंगे और उनके पद चिन्हों पर चलते हुए संगठन को और मजबूती देंगे यदि किसी पत्रकार साथी पर कोई मुशिबत आती है तो हमारा संगठन उन पत्रकार साथियों के साथ 24 घंटा साथ देने के लिए तत्पर रहेगा।उन्होंने यह भी कहा कि जिले की इकाई ने जो मुझे जिम्मेदारी सौंपी है हम उसका अच्छी तरीके से निर्वहान करेंगे और उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले एक सप्ताह के अंदर तहसील इकाई पर पत्रकार साथियों एक मीटिंग बुलाकर आगे की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

14 कोसी परिक्रमा मार्ग चौड़ीकरण मे 11 मकान ध्वस्त को लेकर बढा विवाद

अयोध्या।14 कोसी परिक्रमा मार्ग के चौड़ीकरण को लेकर जनौरा नाका क्षेत्र में प्रशासन की कार्रवाई के बाद विवाद गहरा गया है।जिला प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए 11 मकानों को ध्वस्त कर दिया।कार्रवाई से प्रभावित परिवारों ने आपत्ति जताते हुए अपने स्तर पर कई सवाल उठाए हैं। मामले की जानकारी पर भाजपा महिला मोर्चा की अशोका द्विवेदी, बूथ अध्यक्ष अनीता शर्मा और मंडल उपाध्यक्ष पूजा रावत मौके पर पहुंचीं।उन्होंने प्रभावित परिवारों से बातचीत की और कार्रवाई को लेकर प्रशासन से स्थिति स्पष्ट करने की मांग की। महिला मोर्चा नेताओं का कहना है कि सड़क का मध्य बिंदु निर्धारित कर दोनों ओर से चौड़ीकरण की बात थी, ऐसे में एक तरफ स्थित मकानों पर कार्रवाई किए जाने को लेकर प्रभावित परिवारों की आपत्ति है।उन्होंने कार्रवाई में समानता और पारदर्शिता बरतने की मांग की।वहीं, जिला प्रशासन का कहना है कि चौड़ीकरण की जद में आने वाले भवनों के मालिकों को नियमानुसार पूर्व में नोटिस दिए गए थे और भवनों के मुआवजे की प्रक्रिया भी की गई है। प्रशासन के अनुसार कुछ प्रभावित लोग हाईकोर्ट गए थे, जिसके बाद कुछ समय के लिए ध्वस्तीकरण की कार्रवाई रोकी गई थी। हाईकोर्ट से मिले निर्देश के बाद कार्रवाई दोबारा शुरू की गई।प्रभावित परिवारों का कहना है कि कार्रवाई से उनके सामने आवास और रोजी–रोटी से जुड़ी समस्याएं खड़ी हो गई हैं।उनका आग्रह है कि चौड़ीकरण की जद और मुआवजे समेत पूरी प्रक्रिया को स्पष्ट किया जाए और कार्रवाई में सभी प्रभावित पक्षों के साथ समान व्यवहार हो।नवंबर में प्रस्तावित 14 कोसी परिक्रमा को देखते हुए प्रशासन मार्ग चौड़ीकरण का काम तेजी से करा रहा है। बताया गया कि देर रात सात और मकानों को ध्वस्त किया गया। प्रशासन की कार्रवाई और प्रभावित परिवारों की आपत्तियों के बीच अब यह मामला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 – 7007415808, 9415034002
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।